Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 44 • 05 अगस्त - 11 अगस्त, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-08-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैं-अपने-अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।
- आचार्य श्री भिक्षु

मोक्ष मार्ग का द्वार है मनुष्य जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
28 जुलाई, 2024

आयारो आगम का प्रतिबोध प्रदान कराते हुए अध्यात्म ऊर्जा के भंडार आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि जैन दर्शन में आत्मवाद का सिद्धान्त है। आत्मा अलग है, शरीर अलग है। एक विचारधारा यह भी रही है कि आत्मा और शरीर एक ही है। उपांग आगम रायपसेणियम् में इसका विस्तार मिलता है। कुमार श्रमण केशी और राजा प्रदेशी का आपस में संवाद हुआ। वह आस्तिकवाद और नास्तिकवाद का प्रसंग है। कुमार श्रमण आस्तिकवाद के प्रवक्ता और राजा प्रदेशी नास्तिकवाद का अनुयायी।

जैनदर्शन में आत्मा को शाश्वत माना गया है। आत्मा और शरीर को भिन्न-भिन्न माना गया है। कोई भी शस्त्र आत्मा का छेदन-भेदन नहीं कर सकता। आत्मा तो अछेद्य, अदाह्य, अशोष्य है। हर प्राणी में आत्मा है। प्रश्न हो सकता है कि आत्माएं कभी तो पैदा हुई होगी। पर ऐसी बात नहीं है। आत्मा तो अनादिकाल से है। आयारो के प्रथम अध्ययन में पूर्वजन्म और पुनर्जन्म की बात आ गई है। दोनों का संबंध आत्मा का संबंध है। कईयों को पता चलता है कि आत्मा पुनर्जन्म लेने वाली है। सोऽहं-सोऽहं - वो मैं हूं। कई मनुष्यों को पूर्वजन्म की स्मृति हो जाती है, पर पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं होता। किसी को ज्ञान हो भी जाए, पर साधारणतया पूर्वजन्म याद नहीं रहता।

पूर्वजन्म की स्मृति तीन प्रकार से हो सकती है-स्वस्मृति, तीर्थंकर भगवान से जानकारी और केवलज्ञानी से सुनकर भी जानकारी। पूर्वजन्म के ज्ञान से व्यक्ति की असद् प्रवृत्ति से निवृत्ति और सद् में प्रवृत्ति हो सकती है। शरीर और आत्मा अलग है, इस पर श्रद्धा हो सकती है। जातिस्मृति ज्ञान का धारक पूर्व भवों को जान-देख सकता है, पर असंज्ञी के भवों को नहीं जान सकता, केवल संज्ञी के भव ही जान सकता हैं।

हमें पिछला जन्म नहीं दिखता है, यदि संदेह की स्थिति है कि पूर्वजन्म या पुनर्जन्म है या नहीं। इसका मार्गदर्शन दिया गया है- तुम बुरे काम मत करो, जितना हो सके अच्छे काम करो। मान लो पुनर्जन्म नहीं है, पर अच्छे काम किए तो यह जीवन शांति से बीतेगा। अगर पुनर्जन्म है तो अच्छे काम करने से आगे भी सुगति मिलेगी। दोनों में नुकसान नहीं है। बुरे काम करोगे तो यह भव तो बिगड़ेगा ही, आगे का भव भी बिगड़ सकता है, दुर्गति हो सकती है। इसलिए मनुष्य को अहिंसा, नैतिकता और आध्यात्मिकता का जीवन जीना चाहिए।

मनुष्य जीवन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मनुष्य ही मोक्ष में जा सकता है। अभवी जीव नौ ग्रेवैयक देवलोक तक चला जाये पर मोक्ष में नहीं जा सकता। (शेष पेज 9 पर)

शस्त्र का प्रत्याख्यान और शास्त्र का करें स्वाध्याय : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
27 जुलाई, 2024

ज्ञान की गंगा बहाने वाले, आगमवेत्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्षवाणी की अमी वर्षा कराते हुए फरमाया कि जैन वांग्मय में अनेक आगम शाश्वत हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में 32 आगमों को महत्वपूर्ण रूप से स्वीकार किया गया है। ये आगम बत्तीसी है- ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और एक आवश्यक। ग्यारह अंग स्वतः प्रमाणस्वरूप है। इनमें पांचवां अंग भगवती सूत्र तो कलेवर-मात्रा की दृष्टि से विशालकाय आगम है।

ग्यारह अंगों में प्रथम अंग आयारो (आचारांग सूत्र) का मैं व्याख्यान प्रारम्भ करने जा रहा हूं। यह पहला श्रुतस्कन्ध, कुल नौ अध्ययनों वाला है। इसमें सातवां अध्ययन लुप्त है, अप्राप्त है। इसके नौवें अध्ययन में भगवान महावीर की जीवनी संक्षेप में प्राप्त होती है। इसका पहला अध्ययन है- शस्त्र-परिज्ञा।

आदमी हिंसा के लिए शस्त्र का प्रयोग करता है। दो शब्द हैं- शास्त्र और शस्त्र। शास्त्र का स्वाध्याय और शस्त्र का प्रत्याख्यान करना चाहिए। जिसमें शासन, अनुशासन की बात हो और जो त्राण शक्ति वाला होता है, वह शास्त्र होता है। शास्त्र शासन का साधन हो सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आयारो का संस्कृत भाषा में भाष्य लिखा है। भाष्य से भी अनेक जानकारियां मिल सकती है। आयारो के प्रथम अध्याय के पहले सूत्र में पूर्वजन्म की चर्चा की गई है।

आत्मवाद, कर्मवाद, लोकवाद जैन दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं। इनमें भी आत्मवाद सबसे महत्वपूर्ण है। आत्मा है तभी अध्यात्म की साधना का महत्त्व है। आत्मा शाश्वत है, पुण्य-पाप का फल है तो साधुपन लेने का औचित्य है। आत्मा है ही नहीं तो फिर साधुपन लेनी की कोई अपेक्षा नहीं रह जाती। आत्मा है तो श्रावकत्व भी है।

सुधर्मा स्वामी भगवान महावीर के अनन्तर उत्तराधिकारी बने थे। सुधर्मा स्वामी अपने शिष्य जम्बू को बता रहे हैं कि मैंने भगवान से ऐसा सुना है कि कई मनुष्य ऐसे होते हैं, जिन्हें स्वयं पता नहीं है कि मैं कहां से आया हूं? उन्हें पिछले जन्म का ज्ञान नहीं होता है। कईयों को न पूर्वजन्म का पता लगता है न पुनर्जन्म का पता होता है। कुछ को यह पता हो सकता है

पिछले जन्म का पता होने के तीन कारण हैं-

1. स्व स्मृति
2. पर व्याकरण
3. दूसरों के पास सुनकर।

पिछले जन्म की स्मृति के लोप होने का कारण है कि जब जन्म होता है तब दुःख होता है, और पिछले जन्म में मृत्यु हुई थी तब भी जीव को दुःख होता है। दुःख से चेतना सम्मूर्छित हो जाती है, चेतना पर आवरण सा आ जाता है इसलिए पूर्वजन्म की स्मृति नहीं होती। (शेष पेज 9 पर)

भगवती सूत्र के स्वाध्याय से प्राप्त हो सकती है श्रुत की संपदा : आचार्यश्री महाश्रमण

■ भगवती सूत्र पर व्याख्यान को पूज्य प्रवर ने किया संपन्न ■ टीपीएफ द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

सूरत।
26 जुलाई, 2024

अध्यात्म जगत के महान प्रचेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र की व्याख्या कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र तत्त्वज्ञान का खजाना है। भगवती सूत्र अंग आगम है और इस एक पोथे में विभिन्न विषयों की जानकारियां दी गई हैं। सूत्र के स्वाध्याय से श्रुत की सम्पदा प्राप्त हो सकती है।

भगवती सूत्र में अधिकांशतया प्रश्न गौतम स्वामी द्वारा पूछे गये हैं। प्रश्नकर्त्ता और समाधानदाता का योग मिलने पर कितनों को लाभ हो सकता है। ये प्रश्न कितनों के ज्ञानवर्धन में सहायक बन रहे हैं। भगवान महावीर तो सर्वज्ञ थे, उनके पास तो सम्पूर्ण ज्ञान था। ऐसे उत्तरदाता मिल जाएं तो प्रश्नकर्ता का तो मानो भाग्य खिल जाए। बार-बार भगवान के मुखारविंद से गौतम का नाम उच्चरित होना मानो गौतम स्वामी भी धन्य हो गए। सारे प्रश्नों का उत्तर मिलने पर गौतम स्वामी भगवान को वन्दन करते हैं। नमस्कार कर निवेदन करते हैं- भगवन्! आप जो बात बता रहे हैं, वह सत्य है, असंदिग्ध है। वहां से उठकर फिर विहरण करते हैं। भगवती सूत्र व अन्य आगमों में कृतज्ञता ज्ञापन जैसी किसी बात का उल्लेख नहीं है। व्यवहार में कृतज्ञता ज्ञापन होता है, पर संभवतः भगवान महावीर और गौतम स्वामी कृतज्ञता की भूमिका से ऊपर उठ गए थे। विनय, वंदन का प्रयोग अवश्य मिलता है। गौतम स्वामी द्वारा भगवान से पूछे गए प्रश्न बहुतों के ज्ञानवर्धन में सहयोगी बने।

पूज्यवर ने भगवती सूत्र के क्रम को समाप्त करते हुए आगे आयारो पर व्याख्यान देने की घोषणा की।

"चंदन की चुटकी भली" के प्रसंग 'रूप को गर्व' की व्याख्या कराते हुए पूज्यप्रवर ने फरमाया कि चक्रवर्ती से बड़ा भौतिकता की दृष्टि से कोई नहीं है। तीर्थंकर तो सर्वज्ञ होते हैं। ज्ञान की दृष्टि से संसारी जीवों में तीर्थंकरों से ज्यादा ज्ञान किसी में नहीं होता है।

पूज्यवर ने गत 19 जुलाई को महावीर समवसरण में आठ नव दीक्षित मुमुक्षुओं को सामायिक चारित्र ग्रहण करवाया था। आज उन्हें बड़ी दीक्षा, छेदोपस्थापनीय चारित्र प्रदान करवाया। पूज्यवर ने आर्षवाणी से पांच महाव्रतों एवं छठे रात्रि भोजन विरमण व्रत को समझाया व तीन करण, तीन योग से यावज्जीवन के लिए प्रत्याख्यान करवाए। महाव्रतों में उपस्थित करवाते हुए उन्हें विभिन्न प्रेरणा प्रदान करवाई। मुनि चिन्मयकुमारजी ने अट्ठाई तप का प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किया। विशाल तपः यज्ञ में अपनी आहूति देने वालों को प्रेरणा प्रदान कराते हुए महातपस्वी ने अट्ठाई व अन्य तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाए। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। TPF ट्रस्टी संजय जैन, एजुकेशन कमिटी की चेयरमैन डॉ. वंदना डांगी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए छात्रों को प्रेरणा प्रदान करवाई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

पूर्व कृत पुण्य के योग से प्राप्त है अनुकूलता का संसार : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
25 जुलाई, 2024

आत्मरमण के साधक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र के माध्यम से आगम वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के 34वें शतक में बताया गया है- हमारी दुनिया में अनन्त जीव हैं। सिद्ध जीव तो संसार से मुक्त हैं। संसारी जीव जन्म-मरण करते हैं अर्थात् पुनर्जन्म का सिद्धान्त है।

दो विचारधाराएं- आस्तिक और नास्तिक हैं। आत्मा है, पुण्य-पाप है, पुनर्जन्म है, मोक्ष है आदि को मानने वाले आस्तिक व्यक्ति हो जाते हैं। इनको नहीं मानने वाले नास्तिक हो जाते हैं। आस्तिक विचारधारा में आत्मा और शरीर को अलग-अलग माना गया है। जीव अन्य है, शरीर अन्य है। भेदविज्ञान की धारा को आस्तिक विचारधारा में स्वीकार किया गया है।

नास्तिक विचारधारा में शरीर और जीव एक है। आस्तिक विचारधारा में पुनर्जन्म को स्वीकारा गया है। जैसे आदमी पुराना कपड़ा छोड़ नया वस्त्र धारण कर लेता है, वैसे ही जीव वर्तमान स्थूल शरीर को छोड़ नया शरीर धारण कर लेता है। सूक्ष्म और सूक्ष्मत्तर जीव तो संसारी अवस्था में साथ में ही रहता है।

पुनर्जन्म के अनेक नियम हैं। अगले जन्म में ज्ञान व दर्शन साथ में जाता है, चारित्र साथ नहीं जाता है। यहां एक नियम बताया गया है कि जीव एक योनि से दूसरी गति में जाता है, जिसे अन्तराल गति कहते हैं। अन्तराल गति के दो प्रकार हैं- ऋजुगति व वक्रगति। पृथ्वीकाय के जीवों की अन्तराल गति एक समय, दो समय अथवा तीन समय वाली हो सकती है। एक सैकंड में असंख्य समय बीत जाता है। काल की लघुत्तम इकाई समय है। भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ, मोक्ष में गए। अल्प समय में उनकी आत्मा मोक्ष में एक समय में विराज गई। जीव कहां मरता है और कहां पैदा होता है, इस पर निर्भर करता है कि आत्मा को कितना मोड़ लगेगा, कितना समय लगेगा। पर चार समय से ज्यादा समय अन्तराल गति में नहीं लगता है। अल्प समय में आत्मा अगले जन्म में पहुंच जाती है।

हम चिंतन करें कि हमारा अगला जन्म कहां होगा। वर्तमान में हमें जो अनुकूलता प्राप्त है, वह तो हम पूर्व पुण्य को भोग रहे हैं। आगे के लिए हम क्या कर रहें हैं? धर्म के लिए समय निकालते हैं या नहीं। आगे दुर्गति में जाना न हो जाए। हमें पुनर्जन्म से प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम आगे के लिए भी कुछ धर्म-अध्यात्म की साधना करें।

मुख्य प्रवचन के पश्चात आचार्य प्रवर ने गुरुदेव श्री तुलसी की कृति 'चन्दन की चुटकी भली' में से चक्री सनत्कुमार पर आधारित 'रूप रो गर्व' आख्यान के माध्यम से प्रेरणा दी कि मान, अहंकार को मिटाने वाला महाजन होता है।

शरीर हर व्यक्ति के पास है, शरीर की सुंदरता भी हो सकती है, पर यह नश्वर है। ऊपर से यह शरीर सुंदर है पर भीतर में अशुचि भरी पड़ी है। शरीर की अशुचि की अनुप्रेक्षा करने से विरक्ति की भावना उत्पन्न हो सकती है। शरीर की सुंदरता का महत्त्व हो सकता है, पर आर्जव और मार्दव का अभ्यासी महानता को प्राप्त होता है। सुंदर शरीर का अभिमान न करें, निरहंकारता में रहने का प्रयास करें।

पूज्यवर की अभिवन्दना में मुनि मार्दवकुमारजी एवं मुनि आकाशकुमारजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुनि निकुंजकुमार जी ने पूज्य प्रवर से 10 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जप-तप एवं स्वाध्याय से आत्मा को पवित्र बनाता है चातुर्मास

पीलीबंगा।

महातपस्वी आचार्य महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ठाणा-5 का चातुर्मास प्रवास के लिए जैन भवन में स्वागत रैली के साथ पदार्पण हुआ। जैन भवन में आयोजित स्वागत-अभिनन्दन कार्यक्रम साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के स्मरण के साथ शुरू हुआ।

साध्वी सुदर्शनाश्रीजी ने गुरू शक्ति को पावर हाउस बताते हुए कार्य का सम्पूर्ण श्रेय गुरुदेव को बतलाया और कहा उनकी शक्ति से हम कार्य को मंजिल तक पहुंचा पाते हैं। पीलीबंगा श्रावक समाज को जागृत समाज बताते हुए अध्यात्म के चरम सोपान तक पहुंचने की प्रेरणा प्रदान की।

इससे पूर्व वीएम पब्लिक स्कूल के बच्चों ने स्वागत धुन से स्वागत किया। विनोद देवी छाजेड़ ने मंगलाचरण एवं तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मालचंद जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंचल के अध्यक्ष प्रकाश जैन, महामंत्री ऋषभ चौरड़िया एवं हनुमानगढ़ टाउन सभा के अध्यक्ष संजय बांठिया ने भी अंचल की ओर से स्वागत किया। साध्वी प्रगतिप्रभाजी एवं साध्वी डॉ प्रणतिप्रभाजी ने अपनी जन्मभूमि पर साध्वी वृंद का स्वागत अभिनन्दन किया तथा आध्यात्मिक विकास के लिए परिवार एवं गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए श्रावक समाज को भी आध्यात्मिक विकास की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। स्वागत के क्रम में तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, सकल जैन समाज आदि के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने भी वक्तव्य एवं गीतों के माध्यम से स्वागत स्वर प्रस्तुत किए।

चातुर्मास साधना सिद्धि का द्वार एवं जागरण का काल है

साउथ हावड़ा।

साउथ हावड़ा। मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा -3 का प्रेक्षा विहार, हावड़ा मिल्स क्लब हाऊस दक्षिण हावड़ा में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश अनुशासन रैली के साथ हुआ। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के पश्चात् स्वागत समारोह का आयोजन साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। स्वागत समारोह में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- धार्मिक जगत की धुरी है चातुर्मास। चातुर्मास साधना सिद्धि का द्वार है, जागरण का काल है। चातुर्मास की सफलता में पांच सूत्र है- उत्साह, उदारता, आत्मीयता, आराधना और अनुमोदना। श्रावक समाज को ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना करनी है। मुनिश्री ने कहा - हमारा स्वागत तभी सार्थक होगा जब आप भगवान महावीर की वाणी सुनकर जीवन को सफल बनाएंगे। गुरु ने हमें जो आदेश दिया था उसकी अनुपालना करते हुए आज यह चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया है। मुनि परमानंदजी ने कहा- चातुर्मास जागरण का पर्व है। चातुर्मास में अधिक से अधिक धर्माराधना करें।

इस अवसर पर मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफणा ने दिया। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री बसंत पटावरी ने किया।

धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ें

अमराईवाड़ी।

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी काव्यलताजी का सिंघवी भवन में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश भव्य रैली के साथ हुआ। रैली की शुरुआत से पहले सभा मंत्री निर्मल ओस्तवाल एवम युवक परिषद अध्यक्ष मुकेश सिंघवी तथा समस्त श्रावक समाज ने चातुर्मासिक प्रवेश के निवेदन हेतु विशेष गीतिका का संगान किया। साध्वीश्री द्वारा नवकार महामंत्र के उच्चारण से स्वागत कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने स्वागत गीत द्वारा मंगलाचरण किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष नवरतन चिप्पड़ एवं तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। महिला मण्डल अध्यक्षा लक्ष्मी सिसोदिया, कन्या मंडल की बहनों ने अपने भाव व ्यक्त किये।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने मनमोहक प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेयुप द्वारा विशेष प्रस्तुति दी गई। विशिष्ट अथिति सज्जनलाल सिंघवी ने कहा कि अमराईवाड़ी एक साताकारी जगह है यहाँ मेवाड़ के श्रावक बसते हैं और इनमें संघ समर्पण की भावना भरी हुई है। समारोह के विशिष्ट अथिति यंगलीडर के सम्पादक धर्मेन्द्र जैन ने कहा कि अमराईवाड़ी के कार्यकर्ता एकजुट होकर हर कार्य कर लेते हैं जो शायद बड़े शहरों में भी कम संभव होता है।

साध्वी काव्यलताजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमणजी के मंगल आशीर्वाद से उनकी आज्ञानुसार अमराईवाड़ी में सहवर्ती साध्वी ज्योतियशाजी, साध्वी सुरभिप्रभा, साध्वी राहतप्रभाजी के साथ चातुर्मासिक प्रवेश किया है। अमराईवाड़ी के श्रावक और श्राविकाएं पूरे चातुर्मास में धर्म-ध्यान, सामायिक करें और धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ें।

साध्वी ज्योतियशाजी ने साध्वी मधुस्मिताजी द्वारा प्रेषित चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के शुभकामना सन्देश का वाचन किया।

साध्वी वृंद ने 'बॉम्बे टू अमदाबाद एक्सप्रेस' रेखा चित्र द्वारा चातुर्मास की घोषणा से अब तक के सफर की विशेष प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन निर्मल ओस्तवाल एवं मुकेश सिंघवी ने किया।

अरे जागने वालों जागो, हम तुम्हें जगाने आए हैं

गांधीनगर, बैंगलोर।

महातपस्वी राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी उदितयशाजी ठाणा-4 ने तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में उल्लास एवम उमंग के साथ अहिंसा रेली के साथ प्रवेश किया। साध्वी उदितयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह चातुर्मास प्रयोगात्मक हो उसके लिए हमें अपनी पुरानी विचारधारा में कुछ नया जोड़ना होगा और कुछ घटाना भी होगा। हमें आडंबर और प्रदर्शन की भावना से ऊपर उठना होगा। 'अरे जागने वालों जागो, हम तुम्हें जगाने आए हैं' कविता के माध्यम से श्रावक समाज की चेतना को झकझोरने का प्रयास किया। आपने आगे कहा हमारा पहला लक्ष्य है हमारा साधुपन अच्छा पले, उसके बाद श्रावक व्रत की आराधना में आपके सहयोगी बनें। हमारा और आपका एक ही ध्येय हो - गुरु दृष्टि के आधार पर आगे बढ़ना। सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली, युवक परिषद अध्यक्ष विमल धारीवाल, महिला मण्डल मंत्री ज्योति संचेती, ट्रस्ट मंत्री गौतम डोसी, होसकोटे से सभा अध्यक्ष इंदरचंद धोका ने भावाभिव्यक्ति दी। प्रज्ञा संगीत सुधा व महिला मण्डल ने सुंदर स्वागत गीतिका की प्रस्तुति दी।

साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी भव्ययशाजी एवं साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने गुरुदेव की दृष्टि व संदेश को एक सुंदर संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया और चातुर्मास हेतु निर्धारित मुख्य प्रोजेक्ट बताते हुए ज्ञानशाला, बारह व्रती श्रावक, सुमंगल साधना की विशेष प्रेरणा दी। सभा, ज्ञानशाला, महिला मण्डल, युवक परिषद अणुव्रत समिति, टीपीएफ, कन्या मण्डल, ट्रस्ट के सदस्यों ने मिलकर साध्वीश्री के मिशन एवम प्रोजेक्ट की सुंदर व शालीन प्रस्तुति दी। रैली की सुंदर आयोजना में संयोजक अनिल पोखरना का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

फिट युवा हिट युवा का आयोजन

इचलकरंजी। समाज के किशोरों एवं युवकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से अभातेयुप के 'फिट युवा हिट युवा' आयाम के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् इचलकरंजी ने युवकों एवं किशोरों के लिए साइकिलिंग का कार्यक्रम रखा गया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने सभी युवकों एवं किशोरों का स्वागत किया।

पूर्व अध्यक्ष दिनेश छाजेड़ द्वारा युवकों को व्यायाम प्रयोग करवाने के पश्चात् साइकिलिंग की शुरुआत हुई। मंत्री अंकुश बाफना ने धन्यवाद प्रेषित किया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु संयोजक विनीत ढ़ेलडिया एवं सह-संयोजक नितिन छाजेड़ का श्रम नियोजित हुआ।

कार्यक्रम में कुल 35 युवकों ने सहभागिता दर्ज कराई।

चातुर्मास का समय त्याग-तपस्या का

मण्डिया (कर्नाटक)। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी संयमलताजी ठाणा 4 ने विशाल अहिंसा रैली के साथ शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा भवन में मंगल चातुर्मासिक प्रवेश किया। साध्वी संयमलताजी ने कहा- भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान, धर्म प्रधान व त्याग प्रधान संस्कृति रही है। भारत की अजेयता का कारण अस्त्र-शस्त्र बल नहीं बल्कि इसकी असली ताकत है सन्त। संत दिन-रात अध्यात्म की अलख जगाते हैं, त्याग की धुनी रमाते हैं। चातुर्मास का समय त्याग-तपस्या का, अध्यात्म के जागरण का समय है। आप सभी जागें और अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़ें। साध्वीश्री ने स्वरचित गीत 'गुड़ शक्कर की नगरी नंबर वन' की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वी मार्दवश्रीजी 'तलाश का सफरनामा' के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कोई शोहरत की तलाश में है तो कोई इज्जत की, कोई वोट की तो कोई नोट की, कोई मौके की किसी को धोखे की, किसी को इंसान की जरूरत तो किसी को भगवान की तलाश है। इन तलाशों को पूरा करने हेतु इंसान अपनी तलाश करे। साध्वी मनीषाप्रभाजी, व साध्वी रौनकप्रभाजी ने रोचक संवाद की प्रस्तुति देते हुए चातुर्मास में होने वाले आध्यात्मिक अनुष्ठानों में सहभागिता हेतु आह्वान किया। शुरुआत महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश भंसाली ने स्वागत किया। मैसूर से समागत सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, स्थानकवासी सम्प्रदाय से मंत्री विजयकुमार तलेसरा ने अपनी भावना प्रस्तुत की। कन्या मंडल व ज्ञानशाला के बच्चों ने सुंदर गीतिका के साथ प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप से प्रवीण दक एवं आभार ज्ञापन गौतम भंसाली ने किया।

आचार्य श्री भिक्षु के 299वें जन्म दिवस एवं 267वें बोधि दिवस पर विविध आयोजन

लाडनूं

सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारी जी के सान्निध्य में आचार्य श्री भिक्षु के 299 वां जन्म दिवस एवं 267 वां बोधि दिवस का आयोजन ऋषभद्वार में हुआ। तेरापंथ सभा से मंत्री राकेश कोचर, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन गोलछा एवं कार्यसमिति सदस्य सरिता चोरड़िया ने गीतिका द्वारा एवं उपासिका डॉ. सुशीला बाफना एवं तेरापंथ युवक परिषद के मंत्री राजेश बोहरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी सुनन्दाश्रीजी, साध्वी जागृतयशाजी, साध्वी आस्थाश्रीजी, साध्वी विज्ञप्रभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी प्रमिलाकुमारी जी ने आचार्यश्री भिक्षु के अवदानों के बारे में बताते हुए उन्हें जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन रेणु कोचर ने किया।

गांधीनगर

तेरापंथ भवन में साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का 299 वां जन्म दिवस कार्यक्रम जप के साथ प्रारंभ हुआ। धर्मसभा को संबोधित करते हुए साध्वी उदितयशा जी ने सच्चे भिक्षु भक्त बनने की प्रेरणा देते कहा आज का दिन ज्योति के अवतरण का दिन है। एक नव क्रांति का जन्म दिन है, शक्ति के साथ शांति का जन्म दिन है। आचार्य भिक्षु ने लक्ष्य बनाया 'मर पूरा देश्या आत्मा रा कारज सारस्या'। आचार्य भिक्षु ने आंधी और तूफान की कभी परवाह नहीं की। एक मात्र आत्मा के लिए साधना करते रहे। साध्वी भव्ययशाजी एवं साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने गीत का मधुर संगान किया। साध्वी संगीतप्रभाजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा आचार्य भिक्षु का जन्म उस समय हुआ जब समाज में धर्म के नाम पर पाखंड का बोलबाला था, जब समाज में रूढ़िवादिता अपने पंजे फैला रही थी। जब आचारहीनता से मानव जीवन जर्जरित हो रहा था। उस परिस्थिति में समय की मांग को प्रकृति ने स्वीकारा और भीखण का जन्म हो गया।

सरदारपुरा

अमर नगर स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित हुए महामना भिक्षु को समर्पित अभ्यर्थना कार्यक्रम को संबोधित करते हुये 'शासनश्री' साध्वी जिनबालाजी ने बताया कि आचार्य भिक्षु सत्य मार्ग पर निरंतर बढ़ने वाले थे। बोधि तीन प्रकार की है- ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि। आज के दिन आचार्य भिक्षु को आत्मबोध की प्राप्ति हुई। साध्वी करुणाप्रभा जी ने आचार्य भिक्षु के के जीवन वृत्त के माध्यम से बताया कि भिक्षु स्वामी विभिन्न कष्टों को सहकर कष्ट सहिष्णु बने। इस अवसर पर साध्वी प्राचीप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया और साध्वी भव्यप्रभा जी ने पचरंगी तप में आगे बढ़ने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया।

जैन विश्वभारती के पूर्व प्रवक्ता महावीर राज गेलडा ने बताया तपस्या तप के लिए नहीं स्वयं को तरंगित करने के लिए है। तेरापंथ सभा सरदारपुरा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल अध्यक्ष दिलखुश तातेड, तेयुप अध्यक्ष मिलन बांठिया, तेयुप मंत्री देवीचंद तातेड़ ने अपने भावों से आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा समर्पण किया। इस अवसर पर तपस्वी अंकित जैन के तप की अनुमोदना भी की गई। कार्यक्रम का संचालन तेयुप कार्यकर्ता विकास चोपड़ा एवं जिनेन्द्र बोथरा ने एवं आभार ज्ञापन तेयुप उपाध्यक्ष मनसुख संचेती ने किया।

गंगाशहर

तेरापंथी सभा गंगाशहर द्वारा तेरापंथ धर्म संघ के प्रथम आचार्यश्री भिक्षु का 299 वां जन्मदिवस व 267 वां बोधि दिवस शांतिनिकेतन में साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि विक्रम संवत 1808 में भीखण जी मुनि बने। उन्होंने विक्रम संवत 1817 में तेरापंथ का प्रर्वतन किया। उस समय के विभिन्न धर्म संघ के आचार और अनुशासनहीनता ने उनके मन को उद्वेलित किया और उन्हें सत्यशोधक बना दिया। उन्होंने जैन आगमों का अध्ययन किया और उससे प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर आचार-विचार की सम्यकता का निर्धारण किया। आचार्य भिक्षु प्रतिस्रोतगामी थे। उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वे अपने हर विरोध को सकारात्मकता की दृष्टि से देखते थे। इस अवसर पर तेरापंथ सभा के जैन लूणकरण छाजेड़ ने कहा कि राजनगर संत भीखण जी का बोधि क्षेत्र है। यहां उन्हें नया आलोक मिला और आलोकमय पथ पर चलने की क्षमता मिली। साध्वी गौतमप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया। महिला मंडल की अध्यक्ष संजू लालाणी ने काव्य पाठ किया। तेयुप अध्यक्ष महावीर फलोदिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन रुचि छाजेड़ ने किया।

अमराईवाड़ी ओढव

आचार्य भिक्षु का 299 वां जन्म दिवस बोधि दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यकम का शुभारम्भ तेरापंथ महिला मण्डल ने भिक्षु अष्टकम से किया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने वक्तव्य में कहा- आचार्य भिक्षु हमारी आस्था के धाम हैं। उन्होंने युवा अवस्था में धर्म क्रांति का शंखनाद फूंका। सत्य और सिद्धांतों की सुरक्षा के लिए उन्होंने हर कठिन परिस्थिति का सामना किया। उनका आत्मविश्वास प्रबल था। उनका संकल्प बल अटूट था। उनका पौरुष बल अजेय था। ऐसे विराट व्यक्ति ने आज के दिन राजनगर में श्रावकों को अपने ज्ञान बल से समझाकर बोधि प्राप्त की थी। हम भी आज के दिन संकल्प करें कि हमारी ज्ञान बोधि का जागरण हो। महिला मण्डल की बहनों ने सुमधुर गीत का संगान कर अपने आराध्य को श्रद्धा समर्पित की। साध्वी सुरभिप्रभाजी ने 'भिक्षु प्रथम गणेश' गीत एवं साध्वी राहतप्रभाजी ने मुक्तक के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशा जी ने किया।

कालू

तेरापंथ भवन में साध्वी उज्जवल रेखाजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का 299 वां जन्म दिवस व 267 वां बोधि दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी नम्रप्रभाजी के द्वारा भिक्षु अष्टकम से की गई। साध्वी उज्जवलरेखा जी ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु ऐसे महापुरुष थे जो धर्म के लिए, सत्य के लिए प्राणों की बाजी लगा दी थी। आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन में अनेक कष्टों को सहन किया और उनका परिणाम हमारे लिए वरदान बन गया। आज उनके द्वारा रोपा हुआ तेरापंथ का पौधा एक वटवृक्ष बन गया है। हमें उनके पथ पर चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। साध्वी वृन्द द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। साध्वी हेमप्रभाजी ने अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। महिला मंडल अध्यक्ष चंद्रकला दुगड़ ने अपनी भावनाओं को गीतिका के माध्यम से व्यक्त किया।

मण्डिया, कर्नाटक

साध्वी संयमलता जी ठाणा 4 के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का 299 वां जन्म दिवस व 266 वां बोधि दिवस मनाया गया। नवकार महामंत्र से कार्यक्रम के शुभारंभ के पश्चात तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी संयमलताजी ने अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा- तेरापंथ धर्म संघ के महान व्यक्ति थे आचार्य भिक्षु। आचार्य भिक्षु सूत्र भक्ति व गुरु भक्ति के बेजोड़ उदाहरण थे। वे विलक्षण बुद्धि के धनी थे, हमारा सौभाग्य है कि हमें भिक्षु मिले और तेरापंथ मिला। साध्वी श्री ने भगवती सूत्र के आधार पर बोधि को सरल व सुंदर तरीके से व्याख्यायित किया। साध्वी मनीषाप्रभाजी ने कहा आचार्य भिक्षु का नाम ही मंगलकारी है, विघ्ननिवारक है, समाधायक है। साध्वी रौनकप्रभाजी ने कहा जीवन में नया बोध प्राप्त हो ऐसा लक्ष्य रखें। साध्वी मार्दवश्रीजी ने कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए कहा आचार्य भिक्षु अपने युग के विलक्षण महापुरुष थे। आचार्य भिक्षु ने एक नया मार्ग चुना और वह राजपथ बन गया।

कर्मों की विशेष निर्जरा का समय चातुर्मास

चेन्नई।

जैन तेरापंथ नगर, माधावरम्, चेन्नई के तीर्थंकर समवसरण में साध्वी डा.गवेषणाश्री जी ने चातुर्मासिक चतुर्दशी के अवसर पर उपस्थित धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज जैन धर्म का विशिष्ट दिन है। हिंदू धर्म में भी चातुर्मास का विशेष महत्त्व है। इन चार महीनों में मुख्यतः व्रत, उपवास, तप आदि विशेष आराधना के प्रयोग, अर्हत् वाणी श्रवण आदि किये जाते हैं।

ज्ञान, साधना, चिंतन, मनन, निदिध्यासन चातुर्मास में ही होता है। किसी चीज का खर्च करें, तो उसका संचय भी आवश्यक है। संचय के बिना खर्च कैसे करें? हम पुण्याई का भोग तो कर रहे हैं, पर पुनः संचित नहीं करेंगे तो? इस चातुर्मास में कर्मों की विशेष निर्जरा करते हुए चातुर्मास को सफल बनाना है।

विशिष्ट मंत्रोच्चारण के साथ वर्षावास स्थापना की गई। भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए, गहराई में उतरने के लिए और चातुर्मास में विशिष्ट कुछ करने के लिए साध्वीवृन्द ने एक गवेषणा मॉल की ओपनिंग की।

साध्वीश्री ने कहा- जो चातुर्मास में सामायिक, तप-जप, धर्म जागरणा, धर्म दलाली आदि नहीं करता उनको बाद में पश्चाताप करना पड़ता है। सुरेश रांका ने विचार व्यक्त किए।

भक्तामर स्त्रोत्र जप का आध्यात्मिक अनुष्ठान

बेंगलुरु।

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल गांधीनगर बेंगलुरु के संयुक्त तत्वावधान में भक्तामर स्त्रोत्र जप का आध्यात्मिक अनुष्ठान सजोड़े नेहरू नगर महाविदेह मिलन अपार्टमेंट मे कराया गया। साध्वी उदितयशाजी ने मंत्र विधि के कई रहस्य प्रकट करते हुए बताया कि किस तरह 8 स्वर मिलकर एक मंत्र की रचना होती है। 'ॐ ऋषभाय नमः' का निरंतर स्मरण करने वाले मनुष्य शीघ्र ही अपने बंधन के भय से मुक्त हो जाते हैं, उच्च सम्मान को प्राप्त करते हैं, लक्ष्मी विवश होकर स्वयं उनके पास आती है। भक्तामर के एक-एक पद्य में हमारे जीवन की हर एक विघ्न बाधा दूर करने की शक्ति है। हम सबको इसकी नियमित साधना करनी चाहिए। साध्वी भव्ययशाजी एवं साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने भक्तामर स्तोत्र रचियता आचार्य मानतुंग पर भावपूर्ण गीतिका के द्वारा सभी साधकों को तन्मय बना दिया। साध्वी भव्ययशा जी ने साधकों को नमस्कार महामंत्र से सुदृढ़ कवच बनाने की विधि बताई। साध्वी संगीतप्रभाजी ने भक्तामर स्तोत्र जप का लयबद्ध अनुष्ठान करवाया। खुशबु सालेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। नेहरू नगर श्रावक समाज की ओर से नवरतन गादिया ने साध्वी वृन्द के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष विमल धारीवाल, तेयुप पदाधिकारी, महिला मंडल कार्यक्रम संयोजक नीता गादिया एवं 25 जोड़ों सहित लगभग 110 साधकों की उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर के विविध आयोजन

लिलुआ

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, लिलुआ ने रक्तदान शिविर एवं नेत्रदान जागरूकता अभियान का आयोजन फोरम परवेश बेलूड़ में किया। तेयुप लिलुआ अध्यक्ष अमित बांठिया और मंत्री जयंत घोड़ावत ने सभी का स्वागत किया। इस कैंप में किसी ने सजोड़े तो किसी ने सपरिवार रक्तदान किया। भाई-बहनों सहित कुल 52 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। अभातेयुप के एक विशिष्ट आयाम नेत्रदान की प्रेरणा भी तेयुप लिलुआ ने प्रदान की। कार्यक्रम में सहयोगी संस्था के रूप में सिद्धांत ग्रुप ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। इस कैंप में संयोजक पंकज नाहटा और संदीप दुधेड़िया का सराहनीय श्रम नियोजित हुआ।

उत्तर हावड़ा

तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर हावड़ा ट्रस्ट, भूतनाथ हेल्पिंग हैंड्स एवं श्याम परिवार सुखी संसार द्वारा 'रक्तदान शिविर' का आयोजन सुखी संसार कम्युनिटी हॉल, हावड़ा में किया गया। नमस्कार महामंत्र के सामूहिक जाप के पश्चात् रक्तदान शिविर की शुरुआत हुई। रक्त संग्रह में 'लायंस ब्लड सेंटर' का सहयोग प्राप्त हुआ। कुल 95 रक्त दाताओं ने रजिस्ट्रेशन करवाया, जिसमें 80 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। कार्यक्रम के व्यवस्थित संचालन में प्रदीप बैद का सहयोग प्राप्त हुआ। तेरापंथ युवक परिषद्, उत्तर हावड़ा की ओर से रक्तदान शिविर में महावीर दुगड़, मोहित बच्छावत, दिनेश लुनिया, अंकित मणोत एवं आदर्श दुगड़ का विशेष सहयोग रहा।

संक्षिप्त खबर

समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत कार्यक्रम

टिटिलागढ़। अभातेममं के निर्देशानुसार समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ स्थानीय शासकीय उच्च बालिका विद्यालय पहुंची। मंडल द्वार संरक्षित इस विद्यालय में 'क्रोधी नहीं सहनशील बने' विषय पर पायल जैन ने अपने विचार रखते हुए बच्चों को समझाया कि क्रोध हमारे शारीरिक, मानसिक एवं व्यवहार के लिए बहुत नुकसानदायक है। हमें क्रोधी नहीं सहनशील बनना है। अध्यक्ष बबीता जैन ने बच्चों को महाप्राण ध्वनि एवं ताड़ासन का प्रयोग करवाया और क्रोध नहीं करने का दो घंटे का त्याग करवाया। लगभग 60 बच्चों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता रखी गई। प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। सभी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी का आयोजन

उदयपुर। डॉ. साध्वी परमयशाजी ने कहा कि चातुर्मास का लक्ष्य है जिंदगी की भागदौड़ को कम करना, बाहर से भीतर की अंतर्यात्रा करना। चातुर्मास काल में सभी अध्यात्म का सूरज उगाएं, प्रवचन सुनें, प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करें, नैतिक मूल्यों का आलेख जगाएं, जैन जीवनशैली को अपनाएं। साध्वी परमयशाजी, साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी एवं साध्वी कुमुदप्रभाजी ने नवकारसी, पोरसी, उपवास, एकासन, सामायिक, मौन, पचरंगी, रात्रि भोजन परिहार, खाते-पीते मोक्ष के बारे में बताते हुए उपस्थित जनमेदिनी को त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा दी।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

कालू। तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जंबूकुमार जी ठाणा-2 एवं साध्वी उज्जवलरेखा जी का आध्यात्मिक मिलन समारोह आयोजित हुआ। मुनि जंबू कुमार जी एवं मुनि धवल कुमार जी चाड़वास से अनेक क्षेत्रों से होते हुए आडसर से विहार कर कालू पधारे, उनका आगामी चातुर्मास लूणकरणसर है। तेरापंथ भवन में सुदीर्घजीवी 'शासनश्री' साध्वी बिदामांजी के दर्शन कर मंगल पाठ का श्रवण किया। साध्वी उज्जवलरेखा जी ने मुनिश्री के शुभ भविष्य एवं आगामी चातुर्मास के लिए शुभकामनाएं व्यक्त की।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

■ **दिल्ली।** सुजानगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी लक्ष्मी-राकेश छाजेड़ (सुपुत्र किरण देवी-स्व. छगनमल छाजेड़) का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुभाष दुगड़ एवं पवन गिड़िया ने सम्पूर्ण विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **बेंगलुरु।** शांतिनगर, बेंगलुरू प्रवासी हार्दिक भंसाली सुपुत्र किशोरकुमार-राखी भंसाली एवं कुंभकोणम प्रवासी स्मृति सेठिया सुपुत्री राजेश कुमार-नीतू सेठिया का शुभ विवाह जैन संस्कार विधि से पार्श्व शांति भंडारी भवन, बेंगलुरु में संस्कारक विक्रम दुगड़ द्वारा संपादित करवाया गया।

■ **कोलकाता।** जेसोर रोड-कोलकाता प्रवासी स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद सुराना के सुपुत्र सुमित सुराना का पाणिग्रहण संस्कार, उत्तरपाड़ा प्रवासी स्वर्गीय कन्हैयालाल बैद की सुपुत्री मनीषा बैद के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित हुआ। जैन संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया एवं अनूप गंग ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधि विधान से विवाह संस्कार परिसम्पन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारम्भ

■ **चेन्नई।** टाडगढ़ निवासी, चेन्नई प्रवासी पूनमचंद प्रवीण मांडोत के पैरिस-जॉर्ज टाउन स्थित 'माण्डोत कॉम्प्लेक्स स्थित रतन ऑप्टिकल्स' का भव्य उद्घाटन जैन संस्कार विधि द्वारा सम्पादित हुआ। संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूप चन्द दाँती एवं हनुमान सुकलेचा ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ संस्कार विधि सम्पन्न करवाई।

■ **दिल्ली।** मोमासर निवासी विश्वास नगर, दिल्ली प्रवासी रणजीत कुमार संचेती सुपुत्र बिमला देवी-स्व. प्रसन्न कुमार संचेती के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश सुराणा एवं अशोक सिंघी ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपादित करवाया।

■ **गंगाशहर।** सुशील कुमार खटोल-प्रभा खटोल के नवीनीकृत प्रतिष्ठान 'करणी शुभ इंडस्ट्रीज' का शुभारंभ करणी इंडस्ट्रियल एरिया, बीकानेर में जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक विनीत बोथरा एवं श्रीडूंगरगढ़ से जैन संस्कारक राजेंद्र पुगलिया, प्रदीप पुगलिया और सहयोगी के रूप में तेयुप अध्यक्ष महावीर फलोदिया, ऋषभ लालाणी ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार सहित जैन संस्कार विधि से प्रतिष्ठान का शुभारंभ करवाया।

■ **दिल्ली।** तारानगर निवासी दिल्ली (मानसरोवर गार्डन) प्रवासी पीयूष सुराणा व विकास सुराणा के नूतन प्रतिष्ठान (शोभा ट्रेडिंग करोल बाग) का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पुखराज सुराणा एवं विकास सुराणा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** गंगाशहर निवासी ललित कुमार बोथरा के नूतन प्रतिष्ठान अन्नपूर्णा ट्रेडिंग कंपनी का मंगल शुभारंभ जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक पवन छाजेड़, पीयूष लूणिया, रोहित बैद, विनीत बोथरा, विपिन बोथरा, देवेन्द्र डागा व भरत गोलछा ने विधि विधान पूर्वक मांगलिक मंत्रोचार के साथ सम्पन्न करवाया।

■ **टॉलीगंज।** तेरापंथ युवक परिषद्, टॉलीगंज द्वारा मंगलम बांठिया के नए प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक महेंद्र दुगड़ ने मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया।

चातुर्मास में धर्म आराधना करने का विशेष महत्व

बालोतरा।

औद्योगिक नगरी बालोतरा में आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी मंगलयशाजी ठाणा 4 का तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। राजेश बाफना ने बताया कि तेरापंथ भवन सदर बाजार से रैली रूप से रवाना होकर मुख्य मार्गों से होते हुए रैली न्यू तेरापंथ भवन पहुंची। रैली में ज्ञानशाला ज्ञानार्थी व प्रशिक्षक, कन्या मंडल, महिला मंडल, किशोर मंडल, युवक परिषद व सभा के पदाधिकारी एवं सदस्य और श्रावक समाज की उपस्थिति रही। ततपश्चात स्वागत अभिनंदन कार्यक्रम साध्वी मंगलयशाजी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ प्रारम्भ हुआ। साध्वी मंगलयशाजी ने कहा कि धर्म ध्यान की साधना हर समय की जा सकती है पर चातुर्मास में धर्म आराधना करने का विशेष महत्व है। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी की कृपा व इंगित से बालोतरा के इस भवन में चातुर्मास प्रवेश किया है। साध्वी श्री ने आगे कहा - आत्म जगत की ज्योति को जगाने के लिए कला चाहिए। जिसकी ज्ञान चेतना, विवेक चेतना या आध्यात्मिक चेतना जागृत होती है वही व्यक्ति आत्म जगत की ज्योति जगा सकता है। साध्वी भास्करप्रभाजी ने कहा कि हम हर कार्य आचार्य श्री की ऊर्जा शक्ति से पूर्ण करेंगे। हर घर में धर्म की ज्योत जगे ऐसा प्रयास करेंगे।

साध्वी अपूर्वयशाजी, साध्वी साम्यप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण, सभा एवं तेयुप द्वारा सामूहिक स्वागत गीत एवं महिला मंडल द्वारा अभिनंदन गीत की प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री प्रकाश वैद ने किया।

संबोधि

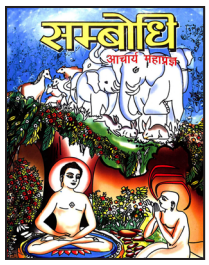

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

१४. द्विविधं विद्यते वीर्य, लब्धिश्च करणं तथा।
अन्तरायक्षयाल्लब्धिः, करणं वपुषाश्रितम्॥

वीर्य के दो प्रकार हैं– लब्धिवीर्य योग्यतात्मक शक्ति और करणवीर्य–क्रियात्मक शक्ति। अंतराय के दूर होने पर लब्धि का विकास होता है और शरीर के माध्यम से करण का प्रयोग होता है।

१५. वपुष्मतो भवेद् वाणी, मनोऽप्यस्यैव जायते।
शारीरिकं वाचिकञ्च, मानसं तत् त्रिधा भवेत्॥

जिसके शरीर होता है उसी के वाणी और मन होते हैं। इसलिए करणवीर्य तीन प्रकार का होता है–शारीरिक, वाचिक और मानसिक।

धर्म का अभ्यास शक्ति पर निर्भर रहता है। शक्ति के दो रूप हैं- लब्धि-वीर्य और करणवीर्य। धर्म का संबंध केवल शारीरिक शक्ति से ही नहीं है। शारीरिक शक्ति से सम्पन्न होते हुए भी अनेक व्यक्ति हिंसा, झूठ, कुकृत्य आदि कर्मों में संलग्न रहते हैं। इसके विपरीत शरीर-बल से क्षीण व्यक्ति अहिंसा, अभय, आत्म-दमन आदि क्रियाओं में सावधान देखे जाते हैं। वे लब्धि-वीर्य से सम्पन्न हैं। आत्म-शक्ति को आवृत करने वाली कर्म-वर्गणाएं जब सक्रिय होती हैं, तब व्यक्ति का सामर्थ्य व्यक्त नहीं होता। उसका मन आत्मोन्मुख न होकर बहिर्मुख होता है। वह आत्म-जागरण में स्वशक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। करणवीर्य शरीर के माध्यम से व्यक्त होता है।

१६. योगः कर्म प्रवृत्तिर्वा, व्यापारः करणं क्रिया।
एकार्थका भवन्त्येते, शब्दाः कर्माभिधायकाः।।

योग, कर्म, प्रवृत्ति, व्यापार, करण और क्रिया–ये कर्म के पर्यायवाची शब्द हैं।

१७. सदसतो प्रभेदेन, द्विविधं कर्म विद्यते।
निवृत्तिरसतः पूर्व, ततः सतोऽपि जायते॥

कर्म के दो प्रकार हैं–सत् और असत्। साधना के प्रारंभ में असत्कर्म की निवृत्ति होती है और जब साधना अपने चरम रूप में पहुंचती है तब सत्कर्म की भी निवृत्ति हो जाती है।

१८. निरोधः कर्मणां पूर्णः, कर्तुं शक्यो न देहिभिः।
विनिवृत्ते शरीरेऽस्मिन्, स्वयं कर्म निवर्तते॥

जब तक शरीर रहता है तब तक देहधारी जीव कर्म–क्रिया का पूर्ण रूप से निरोध नहीं कर सकते। शरीर के निवृत्त होने पर कर्म अपने आप निवृत्त हो जाता है।

१९. विद्यमाने शरीरेऽस्मिन्, सततं कर्म जायते।
निवृत्तिरसतः कार्या, प्रवृत्तिश्च सतस्तथा॥

जब तक शरीर विद्यमान रहता है, तब तक निरंतर कर्म होता रहता है। इस दशा में असत्कर्म की निवृत्ति और सत्कर्म की प्रवृत्ति करनी चाहिए।

मेघः प्राह

२०. कुर्वन् कृषिञ्च वाणिज्यं, रक्षां शिल्पं पृथग्विधम्।
सत्प्रवृत्तिं कथं देव ! गृहस्थः कर्तुमर्हति ?

मेघ बोला–भगवन्! कृषि, वाणिज्य, रक्षा, शिल्प आदि विभिन्न प्रकार के कर्म करता हुआ गृहस्थ सत्प्रवृत्ति कैसे कर सकता है?

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

ध्यान की व्यूह-रचना

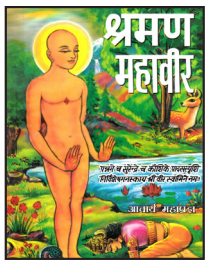

'तो मैं यह समझूं कि भगवान् को भूख लगनी बन्द हो गई?'

'यह सर्वथा गलत है। वे रुग्ण नहीं थे, तब यह कैसे समझा जाए कि उन्हें भूख लगनी बन्द हो गई।'

'तो फिर यह समझूं कि भगवान् भूख का दमन करते रहे, उसे सहते रहे?'

'यह भी सही समझ नहीं है।'

'सही समझ फिर क्या है?'

'भगवान् आत्मा के ध्यान में इतने तन्मय हो जाते थे कि उनकी भूख प्यास

की अनुभूति क्षीण हो जाती थी।' 'क्या ऐसा हो सकता है?'

'नहीं क्यों? महर्षि पतंजलि का अनुभव है कि कंठकूप में संयम करने से भूख और प्यास निवृत्त हो जाती है।'

'कंठकूप का अर्थ?'

'जिह्वा के नीचे तन्तु है। तन्तु के नीचे कंठ है। कंठ के नीचे कूप है।' 'संयम का अर्थ?' 'धारणा, ध्यान और समाधि-इन तीनों का नाम संयम है। जो व्यक्ति कंठ-कूप पर इन तीनों का प्रयोग करता है, उसे भूख और प्यास बाधित नहीं करती। भगवान् ने शरीर को सताने के लिए भूख-प्यास का दमन नहीं किया। उनके ध्यानबल से उसकी मात्रा कम हो गई।

स्वाद-विजय

भगवान भोजन के विषय में बहुत ध्यान देते थे। वे शरीर–संधारण के लिए जितना अनिवार्य होता, उतना ही खाते थे। कुछ लोग रुग्ण होने पर कम खाते हैं। भगवान् स्वस्थ थे, फिर भी कम खाते थे। उनकी ऊनोदरिका के तीन आलंबन थे–सीमित बार खाना, परिमित मात्रा में खाना और परिमित वस्तुएं खाना।

'क्या भगवान् ने अस्वाद के प्रयोग किए थे?

'भगवान् जीवन के हर क्षेत्र में समत्व का प्रयोग कर रहे थे। वह भोजन के क्षेत्र में भी चल रहा था। उनके अस्वाद के प्रयोग समत्व के प्रयोग से भिन्न नहीं थे।'

'क्या वे स्वादिष्ट भोजन नहीं करते थे?'

'करते थे। भगवान् दीक्षा के दूसरे दिन कर्मारग्राम से विहार कर कोल्लाग सन्निवेश पहुंचे। वहां बहुल नाम का ब्राह्मण रहता था। भगवान् उसके घर गए। उसने भगवान् को घृत-शर्करायुक्त परमान्न (खीर) का भोजन दिया।

'भगवान् उत्तर वाचाला में विहार कर रहे थे। वहां नागसेन नाम का गृहपति रहता था। भगवान् उसके घर पर गए। उसने भगवान् को खीर का भोजन दिया।'

'क्या वे नीरस भोजन नहीं लेते थे?'

'लेते थे। भगवान् सुवर्णखल से ब्राह्मण गांव गए। वह दो भागों में विभक्त था। नंद और उपनंद दोनों सगे भाई थे। एक भाग नंद का और दूसरा उपनंद का। भगवान् नंद के भाग में भिक्षा के लिए गए। उन्हें नन्द के घर पर बासी भात मिला।

'वाणिज्यग्राम में आनन्द नाम का गृहपति रहता था। उसके एक दासी थी उसका नाम था बहुला। वह रसोई बनाती थी। यह बासी भात को डालने के लिए बाहर जा रही थी। उस समय भगवान् वहां पहुंच गए। दासी ने भगवान् को देखा। वह दीन स्वर में बोली, 'भंते! अभी रसोई नहीं बनी है। यह बासी भात है। यदि आप लेना चाहें तो लें।' भगवान् ने हाथ आगे फैलाया। दासी ने बासी भात दिया।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञान-प्राप्ति का प्रयोग

(पिछला शेष)

भगवती सूत्र में उल्लेख है कि स्कन्दक ने गौतम गणधर से पूछा- आपको किसने यह अनुशासन दिया?

गौतम ने कहा- 'धर्माचार्य ने।'

यहां धर्माचार्य का अभिप्राय तीर्थंकर महावीर से है।

अग्लान भाव से दस प्रकार का वैयावृत्त्य करने वाला महान् कर्मक्षय करने वाला और आत्यन्तिक पर्यवसान वाला होता है। उत्तराध्ययन के २९ वें अध्ययन में प्रज्ञप्त है कि वैयावृत्त्य से जीव तीर्थंकर नामगोत्र का बन्ध करता है।

महान्तो ज्ञानिनः सन्ति, महान्तो ध्यानिनस्तथा।
तेभ्योपि सुमहान्तश्च, सन्ति सेवापरायणाः ।।

ज्ञानी महान् हैं। ध्यानी महान् हैं। उनसे भी ज्यादा महान् वे हैं जो सेवापरायण हैं। सेवा वही व्यक्ति सुचारु रूप से कर सकता है जो स्वार्थ को छोड़ परार्थ या परमार्थ का अभिलाषी बनता है। यह परार्थ या परमार्थ का प्रयोग है। परार्थ और परमार्थ की भावना जहां होती है वहां स्वार्थ गौण अथवा क्षीण हो जाता है इसलिए वैयावृत्त्य स्वार्थविलय का एक प्रयोग बन सकता है यदि फलाकांक्षा को भावना न हो।

वैयावृत्त्य के दस स्थान - व्याख्यासहित 'ठाणं' में इस प्रकार उपलब्ध हैं-

१. **आचार्य–** ये पांच प्रकार के होते हैं- प्रव्राजनाचार्य, दिशाचार्य, उद्देसनाचार्य, समुद्देशनाचार्य और वाचनाचार्य।

२. **उपाध्याय**– सूत्र की वाचना देने वाले।

३. **स्थविर–** धर्म में स्थिर करने वाले। ये तीन प्रकार के होते हैं-

जातिस्थविर- जिसकी आयु ६० वर्ष से अधिक है।

श्रुतस्थविर- स्थानांग तथा समवायांग का धारक।

पयार्यस्थावि- न्यूनतम बीस वर्ष से साधुत्व पालने वाला।

४. **तपस्वी–** मांसक्षपण आदि बड़ी तपस्या करने वाला।

५. **ग्लान–** रोग आदि से असक्त, खिन्न।

६. **शैक्ष–** शिक्षा ग्रहण करने वाला नवदीक्षित।

७. **कुल–** एक आचार्य के शिष्यों का समुदाय।

८. **गण–** कुलों का समुदाय

९. **संघ–** गणों का समुदाय

१०. **साधर्मिक–** वेष और मान्यता में समान धर्म।

ज्ञान-प्राप्ति का प्रयोग

जीवन-निर्माण में दो तत्त्वों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, वे हैं ज्ञान और चारित्र। इन दोनों में पहला स्थान किसका? मैं इस प्रश्न पर जब दृष्टिपात करता हूं, मुझे सापेक्ष उत्तर मिलता है। दशवैकालिक का सूक्त है- **'पढ़मं नाणं तओ दया'**– पहले ज्ञान और फिर चारित्र। यह बात बिलकुल सही है। सम्यक् ज्ञान के बिना सम्यक् चारित्र प्राप्त नहीं हो सकता। सम्यक् चारित्र का आधार है सम्यक् ज्ञान! अहिंसा, सत्य और समता स्वरूप चारित्र को जो व्यक्ति जानता ही नहीं, उससे वीतरागता को साधना को अपेक्षा साधारणतया नहीं को जा सकती। कम से कम आचरणीय विषय का ज्ञान तो हो, उसके बाद अगला कदम होता है उसके आचरण का। गति से पूर्व गंतव्य का ज्ञान आवश्यक है। इस दृष्टि से सम्यक् ज्ञान की प्राथमिकता है। उसकी महत्ता है। यह एक अपेक्षा है। दूसरी अपेक्षा से चरित्र की प्राथमिकता और प्रधानता है। ज्ञान का स्थान बाद में है, गौण है। दशवैकालिक सूत्र की ही एक गाथा है-

पगईए मंदावि भवंति एगे, डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया।
आयारमंता गुणसुट्ठि अप्पा, जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ।।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री अनोपचंदजी (नाथद्वारा) दीक्षा क्रमांक : 114

मुनिश्री संयम में लहलीन, ज्ञानी–ध्यानी, विनय–शिरोमणि गुरु आज्ञा के प्रति जागरुक और उत्कृष्ट श्रेणी के तपस्वी थे। मुनिश्री की तपश्चर्या का वर्णन बड़ा रोमांचकारी है। आपने उपवास से तेले तक की तपस्या बहुत की पर संख्या उपलब्ध नहीं है। तेले से ऊपर की तपस्या का विवरण इस प्रकार है–4/2, 5/2, 6/2, 7/2, 8/2,9/2, 10/3, 11/3, 12/1, 13/1, 15/3, 16/3, 17/1, 18/1, 19/1, 20/1, 21/2, 22/2, 23/2, 30/2, 35/1, 37/1, 38/2, 41/1, 42/1, 45/1, 48/1, 53/1, 55/1, 57/1. 63/1,77/1, 94/1,95/1, 109/1, 181/1, 187/1, 193/1, 218/1। मुनिश्री ने अंतिम समय में 15 दिन का चौविहार तप किया।

– साभार: शासन समुद्र –

अगस्त 2024
सप्ताह के विशेष दिन

13 अगस्त
भगवान पार्श्वनाथ निर्वाण कल्याणक

15 अगस्त
78वां स्वतंत्रता दिवस

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संक्षिप्त खबर

चातुर्मासिक भव्य प्रवेश

सिकंदराबाद। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला आदि ठाणा-4 का मंगल चातुर्मासिक प्रवेश भव्य जुलूस के साथ तेरापंथ भवन डी. वी. कॉलोनी में हुआ। नमस्कार महामंत्र के साथ स्वागत समारोह का शुभारम्भ हुआ। महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा कविता आच्छा, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अभिनन्दन नाहटा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष पंकज संचेती, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, तेरापंथी सभा सिकन्दराबाद अध्यक्ष सुशील संचेती एवं गणमान्य व्यक्तियों ने साध्वीश्री के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किये। साध्वी अमितरेखाजी ने चातुर्मास में करणीय कार्यों के लिए प्रेरणा दी। 'शासनश्री' साध्वी शिवमालाजी ने सभी को चातुर्मास में आध्यात्मिक लाभ लेने की प्रेरणा दी। संचालन लक्ष्मीपत बैद व राकेश सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के मंत्री हेमन्त संचेती के किया।

कैंसर जागरूकता अभियान

कांदिवली। प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान योग साधना केंद्र कांदिवली एवं प्रेक्षा वाहिनी द्वारा 'कैंसर कारण एवं निवारण' विषय पर गोष्ठी व प्रेक्षाध्यान सघन साधना शिविर का आयोजन श्री कृषांगली आकुर्ली माता मंदिर देवस्थान के प्रांगण में किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड ने कैंसर जागरूकता के बारे में प्रशिक्षण दिया। विमला दुगड़ ने प्रेक्षाध्यान में समताल श्वास प्रेक्षा का सुंदर प्रयोग करवाया।

निःशुल्क मधुमेह परीक्षण शिविर

पूर्वांचल कोलकाता। तेरापंथ युवक परिषद् पूर्वांचल-कोलकाता ने तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, पूर्वांचल एवं सन टू ह्यूमन फाउंडेशन के साथ मिलकर मेवाड़ बैंक्वेट में आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के देखरेख में 75 जरूरतमंद लोगों का निःशुल्क मधुमेह एचबीएवनसी परीक्षण किया। अध्यक्ष नवीन सिंघी, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, पूर्वांचल के अध्यक्ष विनोद दुगड़, एटीडीसी सलाहकार रवि दुगड़, एटीडीसी पर्यवेक्षक व परिषद् के उपाध्यक्ष द्वितीय नीरज बेंगानी के अथक श्रम से शिविर सुव्यवस्थित और सफल रहा।

चातुर्मास काल में जप और तप का संगम देखने को मिलेगा

रायपुर, छत्तीसगढ़। मुनि सुधाकरजी अपने सहवर्ती मुनि नरेशकुमार जी के साथ गुरुइंगित अनुसार चातुर्मास हेतु रायपुर, छत्तीसगढ़ पधारे। चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर आयोजित शोभायात्रा में रायपुर के साथ ही राजनांदगांव, दुर्ग, भिलाई आदि क्षेत्रों से भी श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। स्वागत समारोह में मुनि सुधाकर जी ने जैन धर्म में चातुर्मास की महिमा से अवगत कराते हुए बताया कि इस चातुर्मास काल में विशेष रूप से जप और तप का संगम देखने को मिलेगा। जप और तप दोनों की अपनी अलग-अलग महिमा है परन्तु जब तप के साथ जप का संगम होता है तो उसका लाभ कई गुना बढ़ जाता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि देव-गुरु-धर्म की शरण में रह कर हम लक्षित मंजिल को बहुत ही आसानी के साथ पा सकते हैं। मुनि नरेशकुमार जी ने गीतिका के माध्यम से चातुर्मास की महिमा का संगान किया। कार्यक्रम में कन्या मंडल ने मंगलाचरण, तेममं, तेयुप एवं टीपीएफ ने स्वागत गीत व अनेकों व्यक्तियों ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन मनीष नाहर तथा आभार ज्ञापन अभिषेक गांधी ने किया।

स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सान्निध्य में 'मधुमेह कारण व निवारण' विषय पर स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ सभागार में उत्तर हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा शरीर धर्म साधना का ही नहीं अपितु समग्र साधना का प्रमुख कारण है। स्वास्थ्य से ही साधना संभव है। व्यक्ति की स्वस्थता में शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक रूप से स्वस्थ होना ही स्वस्थता है।

बीमारी का मूल कारण है- भावों में मलिनता आना। रहन-सहन, खान-पान व अव्यवस्थित दिनचर्या अतिरिक्त दबाब उत्पन्न कर देते हैं जिससे व्यक्ति चिंता के चक्र में उलझकर मधुमेह का शिकार हो जाता है। मधुमेह से बचना है तो जीवन शैली में बदलाव लाना बहुत जरूरी है।

चिंता और तनाव से भी बचना बहुत जरूरी है। इसके लिए प्रेक्षाध्यान एवं योग के प्रयोग भी कारगर साबित हो सकते हैं। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुख्य वक्ता डॉ. पवन अग्रवाल, डाइटिशियन ऋतुपर्णा व आयुर्वेदाचार्य ओमप्रकाश डागा ने मधुमेह कारण व निवारण पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का शुभारंभ तेयुप. के मंगल संगान से हुआ।

स्वागत भाषण उत्तर हावड़ा सभा के अध्यक्ष जुगलकिशोर बोथरा ने दिया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रवीण सिंघी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

भक्तामर आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन

छोटी खाटू।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या 'शासनश्री' साध्वी कमलप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन किया गया।

इस अनुष्ठान में 29 दंपत्तियों के अतिरिक्त अनेक श्रावक-श्राविकाओं, कन्या मंडल, ज्ञानशाला ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। लाल चुनरी ओढ़े बहनों एवं श्वेत परिधान में भाइयों की स्वास्तिकार पंक्ति सबके लिए विशेष आकर्षण रही। साध्वी वृंद ने भक्तामर का लयबद्ध उच्चारण करते हुए सबको उसके अर्थ से भी अवगत कराया।

साध्वी कमलप्रभा जी ने भक्तामर स्तोत्र की रचना से जुड़े हुए इतिहास की जानकारी देते हुए कहा 11वीं शताब्दी में मानतुंगसूरी द्वारा विरचित भगवान आदिनाथ की यह स्तवना आज भी पूरे जैन समाज के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। इसके माध्यम से आज चिकित्सा पद्धतियां भी चल रही है।

मानतुंग आचार्य ने जैन शासन की प्रभावना की स्थिति को सम्मुख रखकर इस स्तोत्र की रचना की थी। इसके प्रभाव से 48 ताले अपने आप टूट गए, जिनमें मानतुंग सूरी को कैद कर रखा था। इस चमत्कार को देख तत्कालीन राजा हर्ष देव जैन धर्म अनुरागी बन गए।

साध्वी वृंद ने इस अवसर पर मधुर गीत का भी संगान किया।

'हर घर टीटीएफ' कार्यक्रम ऑनलाइन आयोजित

हैदराबाद। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के मार्गदर्शन में तेयुप हैदराबाद द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स के अंतर्गत 'हर घर टीटीएफ' का ऑनलाइन आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत 'हर घर टीटीएफ' गीत के साथ की गई। तेयुप हैदराबाद अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि तेरापंथ टास्क फोर्स आपातकालीन चिकित्सा के कई महत्वपूर्ण बिंदुओं को समाहित कर कार्यक्रम कर रही है और इस प्रकार के कार्यक्रम समाज में ज्यादा से ज्यादा होने चाहिए। तेरापंथ टास्क फोर्स के राष्ट्रीय प्रभारी मनीष पटावरी ने बताया हर घर टीटीएफ के अंतर्गत पूरे देश में विभिन्न आपदा-विपदा की परिस्थिति में स्वयं एवं अन्य लोगों को सुरक्षित रखने के बारे में जरूरी जानकारी साझा की जा रही है। कार्यक्रम में ट्रेनर के रूप में राष्ट्रीय प्रशिक्षक जय चोरडिया ने अपनी सेवाएं दी ।

उन्होंने बर्न, ब्लीडिंग एवम सीपीआर पर कई सुरक्षात्मक बिंदुओं पर प्रकाश डाला। टीपीएफ़ दक्षिण जोन अध्यक्ष मोहित बैद ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कार्यक्रम को सभी के लिए बहुपयोगी बताया। कार्यक्रम में विभिन्न संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी अपनी सहभागिता दर्ज कराई। इस कार्यक्रम से लगभग 106 प्रतिभागी जुड़े। मंत्री अनिल दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया।

त्याग जैन धर्म की आत्मा है

जलगांव। त्याग जैन धर्म की आत्मा है, यह स्वागत समारोह मेरा नहीं है - यह त्याग और तपस्या का, गुरुदृष्टि का अभिनंदन है। धर्मसंघ आदेश, अनुशासन, मर्यादा पर टिका हुआ है, गुरु आज्ञा सर्वोपरि है। धर्म की लौ जगाने का समय है - चातुर्मास।

इस दौरान सभी को अध्यात्म के साथ-साथ धर्म आराधना कर धार्मिक संस्कार जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। जप, तप, त्याग और संयम से जीवन की बगिया को सुगंधित करें। यह समय पाप से मुक्ति और आत्म-जागरण की दिशा में आगे बढ़ने का है। साध्वी प्रबलयशाजी ने चातुर्मासिक मंगल प्रवेश समारोह में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें अपने अंदर से क्रोध, मान, माया और लोभ को दूर कर आत्मा को उज्ज्वल बनाना चाहिए। साध्वी सौरभप्रभाजी एवं साध्वी सुयशप्रभाजी ने तप को चातुर्मासिक सफलता की कुंजी बताते हुए कहानियों एवं सुंदर गीतों के माध्यम से चातुर्मास का महत्व बताया। कार्यक्रम की शुरूआत साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण से हुई। मंगलाचरण नम्रता सेठिया ने किया। तेरापंथ महिला मंडल, भिक्षु भजन मंडली ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। साध्वीश्री का परिचय राजकुमार सेठिया एवं राजेश धाडेवा ने दिया। कार्यक्रम का संचालन ठाकरमल सेठिया तथा आभार सुनील बैद ने व्यक्त किया।

आध्यात्मिक वैभव पाने का स्वर्णिम अवसर होता है चातुर्मास

नागपुर।

मुनि अर्हत कुमार जी ने सालासर विहार से पर्यावरण रैली के साथ अणुव्रत भवन में मंगल प्रवेश किया। भव्य जुलूस में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ कन्या मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल ने उत्साह उमंग के साथ भाग लिया। मुनि अर्हतकुमार जी ने कहा- संतों का आगमन जीवन वीणा को झंकृत कर देता है। संतों के सान्निध्य से व्यक्ति की दशा व दिशा दोनों बदल जाती है।

भारतीय संस्कृति में चातुर्मास का विशेष महत्व है। चतुर्मास का पावन समय हमें भोग से योग, राग से विराग, प्रवृति से निवृत्ति व आसक्ति से अनासक्ति की ओर बढ़ने को प्रेरित करता है। रत्न तो समुद्र में होते हैं, डुबकी लगाने वाला ही उन्हें प्राप्त कर सकता है। जिसके भीतर त्याग है वही व्यक्ति पाने की खोज करेगा। उसी प्रकार जिसके भीतर मुक्ति को प्राप्त करने की तीव्र उत्कंठा है वही साधना के पथ पर अग्रसर होगा। मुनिश्री ने आगे कहा - सभी एकजुट होकर चातुर्मास को सफल बनाएं एवं धर्मसंघ की प्रभावना करें। गुरुदेव की यह अनुकंपा हमारे लिए वरदान सिद्ध हो।

मुनि भरतकुमार जी ने चातुर्मास का अर्थ बताते हुए कहा - चार महीनों के लिए, तुम्हें, रब से, मिलाने के लिए संपर्क करना ही चातुर्मास है। हर व्यक्ति चातुर्मास में पंचाचार की आराधना करे। मुनि जयदीप कुमार जी ने भी अपने वचार व्यक्त किए।

स्वागत कार्यक्रम का प्रारंभ TPF सदस्यों के मंगलाचारण द्वारा हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष विजय रांका ने दिया। तेममं अध्यक्षा सरिता डागा, तेयुप अध्यक्ष जितेंद सेठिया, TPF अध्यक्ष प्रियांक छाजेड़, ज्ञानशाला प्रभारी महेंद्र बोरड़ आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन प्रमिला मालू ने किया।

अध्यात्म का दीप करना है जप, तप और स्वाध्याय से प्रज्वलित

विलेपार्ले (मुंबई)।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी शकुन्तलाकुमारीजी आदि साध्वी वृंद ने विशाल सद्भावना यात्रा के साथ विशनदयाल गोयल फ्लैट, विलेपार्ले में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया। नमस्कार महामंत्र के संगान के पश्चात 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी द्वारा रचित गीत 'शांति रहेगी आठों याम' का संगान एवं जप प्रयोग किया गया। विलेपार्ले व सांताक्रुज महिला मंडल, तेयुप डोंबिवली, रेणु कोठारी, ज्ञानशाला के बच्चों ने गीत के माध्यम से स्वागत किया। गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए साध्वी शकुन्तलाकुमारीजी ने कहा- यह चतुर्मास 'शासनश्री' साध्वी सोमलताजी का है। इस चातुर्मास में अध्यात्म का दीप जप, तप और स्वाध्याय से प्रज्वलित करना है। गुरुदेव की शक्ति से व उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी की प्रेरणा से व आप सभी की धार्मिक आराधना से यह चतुर्मास ऐतिहासिक बने।

साध्वीश्री ने गोयल परिवार की सेवा को प्रशंसनीय बताया। साध्वी संचितयशाजी, साध्वी जागृतप्रभाजी व साध्वी रक्षितयशाजी ने अपने विचारों को 'अजब गजब मॉल' के दृश्य से व गीत से व्यक्त किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अनिल बाफना एवं आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री राकी कोठारी ने किया।

पृष्ठ एक का शेष

मोक्ष मार्ग का द्वार है...

अनुत्तरवासी देवताओं को मोक्ष प्राप्त करने के लिए मनुष्य जीवन लेना होता है। मनुष्य जीवन मोक्ष मार्ग का द्वार है। इसका हम अच्छा धार्मिक-आध्यात्मिक लाभ उठावें। तपस्या में भी आगे कदम बढ़ायें। चतुर्मास का मौका है, मौके पर कई काम हो सकते हैं। जितना हो सके तपस्या में आगे बढ़ें। ज्ञानाराधना भी चलता रहे। बुरे कार्यों से बचें तो हमारी आत्मा विशुद्धि की ओर आगे बढ़ सकती है। आचार्य प्रवर के मंगल प्रवचन के उपरांत साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सबका चिन्तन है कि हमें मुक्ति प्राप्त करनी है, जैन दर्शन में तीन योग- मनोयोग, वचन योग और काय योग बताये गए हैं, जिनसे हम प्रवृत्ति करते हैं। मन के तीन कार्य है चिन्तन, स्मृति और कल्पना। जो व्यक्ति सकारात्मक होते हैं, वे प्रगति करते हैं। नकारात्मक सोच वाला पतन को प्राप्त हो सकता है। सकारात्मक सोच वाले गुणों को देखते हैं। वे अभाव में भी स्वभाव का दर्शन करते हैं। हमें सफलता प्राप्त करनी है, तो जो है, उसमें खुश रहना है। परम पूज्यवर तो सकारात्मकता के स्रोत हैं, जिससे आपकी आध्यात्मिक ऊर्जा बढ़ती रहती है। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री के समक्ष पावस प्रवास व फड़द का लोकार्पण किया गया। चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति द्वारा संयम सारथि एप्लीकेशन को भी प्रस्तुत किया गया। तेरापंथ किशोर मण्डल-सूरत ने गीत की प्रस्तुति दी। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के बैनर को अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा आचार्यश्री के समक्ष अनावरित किया गया। आचार्यश्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के पदाधिकारीगण ने भिक्षु चरमोत्सव के बैनर को लोकार्पित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

शस्त्र का प्रत्याख्यान और...

'रूप रो गर्व' की आख्यान का श्रवण कराते हुए पूज्यवर ने फरमाया कि चक्रवर्ती सनत्कुमार की सुंदरता ऐसी थी कि देवकुमार भी पीछे रह जाते। देव रूपी ब्राह्मणों द्वारा उसके रूप को देख संतुष्ट होने पर सनत्कुमार को अहंकार आ गया। देवों के बताने पर शरीर की स्थिति देखकर आत्म कल्याण की भावना जागृत हो गई कि मुझे तो अब साधना करनी है, वैराग्य जाग गया कि मुझे तो पावन को प्राप्त करना है। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि तीर्थंकर भक्ति में रचित स्तुतियों में एक महत्वपूर्ण स्तुति है- चतुर्विंशति स्तव, जो लोगस्स रूप में प्रचलित है। यह एक महामंत्र है, महाशक्ति है। जैन शासन में इसको श्रद्धा से स्वीकार किया गया है। मंगलों में पहला मंगल तीर्थंकर होते हैं। दूसरा मंगल है- स्तुति। स्तवन और स्तुति मंगल कहलाते हैं। लोगस्स दो मंगलों के योग से बना है। इसके स्मरण से आत्मविशुद्धि होती है। लोगस्स पाठ आवश्यक सूत्र का एक अंग है। आवश्यक सूत्र जैन साधना का प्राण है। पूज्यवर की पावन सन्निधि में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'शासनश्री' मुनिश्री धर्मचन्दजी 'पीयूष' की जीवनी 'मेरी धर्मयात्रा' का लोकार्पण किया गया। टीपीएफ द्वारा 8वां नेशनल डॉक्टर्स कॉन्फ्रेंस कार्यक्रम पूज्यवर की पावन सन्निधि में शुरू हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

विभिन्न संस्थाओं का शपथ ग्रहण कार्यक्रम समारोह

जसोल

मुनि यशवंतकुमार जी ठाणा 2 का के सानिध्य में तेरापंथ सभा जसोल व तेरापंथ युवक परिषद का शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन स्थानीय पुराना ओसवाल भवन, जसोल में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। महिला मंडल द्वारा मंगलचारण की प्रस्तुति हुई। निवर्तमान सभा अध्यक्ष उषभराज तातेड़ ने नव निर्वाचित सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी को शपथ दिलाई व निवर्तमान तेयुप अध्यक्ष तरुण भंसाली ने नव निर्वाचित तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया को शपथ दिलाई। नव निर्वाचित अध्यक्ष भूपतराज कोठारी व नव निर्वाचित तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया ने अपने मंत्री मंडल का गठन कर सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। इससे पूर्व सभा गीत का संगान सभा सदस्यों द्वारा एवं विजय गीत का संगान तेयुप सदस्यों द्वारा किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेरापंथ महासभा सदस्य पुष्पराज कोठारी ने किया। तेयुप अध्यक्ष मनीष बोकड़िया ने अग्रिम एक साल की कार्ययोजना को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सुमन कोठारी ने किया।

पाली

तेरापंथ भवन में तेरापंथ युवक परिषद् पाली के सत्र की 2024-25 की नवगठित कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह मुनि सुमतिकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किता गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण राहुल बालड़ एवं नरेश मण्डोत ने किया। जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण कार्यक्रम संस्कारक बसंत सोनी मंडीया ने कराया। निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश सेठिया ने वर्तमान अध्यक्ष विपिन बांठिया को शपथ दिलाई। विपिन बांठिया ने समाज के सहयोग से अभातेयुप निर्देशित कार्य करने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष मर्यादा कोठारी ने बताया तेयुप एक ऐसी संस्था है जिसमें इन और आउट की प्रक्रिया होती है। 21 साल का युवक इन होता है व 45 साल की उम्र वाला युवक बिना किसी शर्त के आउट हो जाता है। मुनि सुमति कुमार जी ने चातुर्मास में आध्यात्मिक कार्य व आत्मा को उज्जवल बनाने का लक्ष्य रखने की प्रेरणा दी। मुनि देवार्यकुमार जी ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्ष विपिन बांठिया ने उपाध्यक्ष राजेश मरलेचा, रितेश संखलेचा, मंत्री पीयूष चोपड़ा, सह मंत्री अरिहंत सुन्देचा, राहुल गोलछा, कोषाध्यक्ष रोशन नाहर व संगठन मंत्री निलेश मेहता एवं पूरी कार्यकारिणी को शपथ दिलाई गई। संपूर्ण तेरापंथ समाज की ओर से महासभा सदस्य गौतम छाजेड़ एवं अभातेयुप नेत्रदान राज्य प्रभारी रोशन नाहर ने युवा शक्ति को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की। मंच संचालन अरिहंत सुंदेचा किया।

भीलवाड़ा

तेरापंथ युवक परिषद् संस्था भीलवाड़ा का शपथ ग्रहण समारोह साध्वी कीर्तिलताजी ठाणा - 4 के सान्निध्य में एवं अभातेयुप राष्ट्रीय सहमंत्री लक्की कोठारी की अध्यक्षता में परिसंपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी कीर्तिलता जी द्वारा नवकार महामंत्र के जाप से हुआ। भिक्षु भजन मंडली द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। मेवाड़ कॉन्फ्रेंस अध्यक्ष राजकुमार फत्तावत ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। समारोह के मुख्य अतिथि टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, विशिष्ट अतिथि महासभा के उपाध्यक्ष निर्मल गोखरू, अभातेममं महामंत्री नीतू ओस्तवाल, सभा अध्यक्ष जसराज चोरडिया, शाखा प्रभारी संदीप हींगड एवं अभातेयुप परिवार एवं समाज के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। निवर्तमान अध्यक्ष सुरेश चोरड़िया ने नव निर्वाचित अध्यक्ष पीयूष रांका को शपथ दिलाई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष पीयूष रांका ने पधारे हुए सभी अतिथियों एवं समाजजनों का स्वागत कर नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा की जिसमें उपाध्यक्ष सुमित नाहर, राजु कर्णावट, मंत्री महावीर खाब्या, सहमंत्री सुनील हींगड, दीपक पीतलिया, कोषाध्यक्ष शीर्षक नेनावटी , संगठन मंत्री बादल मेहता को नियुक्त किया गया। इस दौरान अभातेयुप राष्ट्रीय सहमंत्री लक्की कोठारी ने पूरी कार्यकारणी को शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन एवं अंत में सभी का आभार मंत्री महावीर खाब्या ने किया।

सवा करोड़ मंत्र जप अनुष्ठान का शुभारंभ

पुणे।

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य डॉ. मुनि आलोक कुमार जी और मुनि हिमकुमार जी के मार्गदर्शन में पुणे में 'सवा करोड़ मंत्र जप अनुष्ठान' का शुभारंभ हुआ। इस पवित्र आयोजन में लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया और मंत्रों की ध्वनि से वातावरण भक्तिमय हो उठा। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में मंत्र जप के महत्व और इससे होने वाले लाभों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मंत्र जप करने से मन शांत होता है, एकाग्रता बढ़ती है और नकारात्मक विचारों का नाश होता है। मुनिश्री ने मंत्र जप करने की विधि बताते हुए प्रतिदिन 11 माला फेरने की प्रेरणा दी। यह मंत्र जप अनुष्ठान 19 जुलाई से प्रारंभ होकर 3 नवंबर तक चलेगा। मंत्र जप समारोह तेरापंथ युवक परिषद, पुणे द्वारा आयोजित किया गया है। इस अनुष्ठान को सफल बनाने में भूषण कोटेचा अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

चातुर्मास का समय अध्यात्म का प्राणवान समय

कोयंबतूर।

तमिलनाडु के कोयंबतूर शहर स्थित तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीपकुमारजी ठाणा–2 का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। राजगुरु अपार्टमेंट से भवन में मुनिद्वय का रैली के साथ प्रवेश हुआ।

मुनि दीपकुमार जी ने कहा कि चातुर्मास का समय धर्मध्यान की सीजन का समय है। इस समय संतजन आचार्यवर द्वारा निर्धारित क्षेत्र में चातुर्मासिक प्रवेश करते हैं, तो श्रावक समाज में नए उल्लास का संचार हो जाता है। चातुर्मास का समय अध्यात्म का प्राणवान समय है। सौभाग्य से हमें जिनशासन प्राप्त हुआ है, उसमें भी तेरापंथ धर्मसंघ जैसा संघ प्राप्त हुआ है। यहां एक गुरु आज्ञा में सब कार्य होते हैं। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी की अनुशासना में सब साधना कर रहे हैं। मुनिश्री ने आगे कहा कि आज का दिन आचार्य श्री भिक्षु के साथ जुड़ा हुआ है, उनका जन्म दिवस है। आचार्य भिक्षु मंगल पुरुष थे। उनका अथ से इति तक का जीवन मंगल ही मंगल था। मुनिश्री ने चातुर्मास से संबंधित विविध बातों की प्रेरणा प्रदान की। मुनि काव्यकुमारजी ने कहा कि कोयंबतूर वासी चातुर्मास का पूर्ण रूप से लाभ उठाएं। कार्यक्रम में तेरापंथ सभा कोयंबतूर के अध्यक्ष देवीचंद मंडोत, तेरापंथ भवन ट्रस्ट अध्यक्ष महावीर भंडारी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजूजी सेठिया, तेरापंथ युवक परिषद् उपाध्यक्ष चिराग बोथरा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

तेरापंथ महिला मंडल कोयंबतूर और तिरुपुर की बहनों ने गीत का संगान किया। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा और मूर्तिपूजक संघ, कोयंबतूर अध्यक्ष गुलाब मेहता ने भी स्वागत में विचार रखें। संचालन तेरापंथ महिला मंडल, कोयंबतूर की सहमंत्री मधु चौरड़िया ने किया।

सौर ऊर्जा संयंत्र एवं नवीनीकृत भवन का उद्घाटन

चेन्नई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड, साहूकारपेट, चेन्नई द्वारा तेरापंथ सभा भवन में नवीन सौर ऊर्जा संयंत्र एवं नवीनीकृत भवन का उद्घाटन हुआ। नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुए समारोह में जैन संस्कारक पदमचन्द आंचलिया, स्वरूप चन्द दांती, हनुमान सुखलेचा ने मंगल मंत्रोच्चार से उद्घाटन विधि सम्पादित की। ट्रस्ट बोर्ड प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़ ने स्वागत स्वर के साथ अनुदानदाताओं, जैन संस्कारकों, गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया। नवनीत सेठिया ने ट्रस्ट बोर्ड द्वारा संघ सेवा में योगभूत बनाने के लिए साधुवाद सम्प्रेषित किया।

तेयुप अध्यक्ष संदीप मूथा और जैन संस्कारकों ने ट्रस्ट बोर्ड एवं अनुदानदाताओं को मंगल भावना पत्रक भेट किया। सोलर प्लांट के सहयोगी रणजीतमल, अक्षयकुमार, ध्रुव छल्लाणी परिवार एवं भवन नवीनीकरण सहयोगी शांतिदेवी स्व. इंदरचंद सेठिया परिवार, धर्मीचंद, हुकमीचंद छल्लाणी परिवार, करणलाल लहरीबाई चिप्पड़ परिवार द्वारा साहूकारपेट ट्रस्ट बोर्ड को प्रदत्त अनुदान हेतु ट्रस्ट बोर्ड द्वारा सभी का अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर ट्रस्ट बोर्ड सदस्यों के साथ संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, गणमान्य व्यक्तियों की महनीय उपस्थित रही। तत्पश्चात मुनि हिमांशुकुमार जी ठाणा 2 के चातुर्मासिक प्रवेश के अवसर पर मुनिश्री के मंगल मंत्रोच्चार के साथ पट्ट का अनावरण किया गया।

पृष्ठ 12 का शेष

संस्कारों के धन से...

अमृत वेला में धार्मिक पाठ करें तो अच्छी मानसिकता बन सकती है। नवकार मंत्र का 21 बार पाठ का संकल्प बन जाए, गुरुओं का भी स्मरण किया जाए।

किशोर जीवन से ही बढ़िया जीवन शैली बन जाए। दिनचर्या का प्रारंभ और समापन दोनों समय पवित्र स्मरण हो जाए। ज्ञानशाला का अध्ययन होने के बाद जैन विद्या का अध्ययन भी कर सकते हैं। संतों के संपर्क में आने से भी उनको अच्छी प्रेरणा मिल सकती है। यह सम्मेलन किशोरों को संस्कार और सद्ज्ञान देने वाला सिद्ध हो सकता है।

पूज्य प्रवर के मंगल प्रवचन के पश्चात किशोर मंडल के राष्ट्रीय सह प्रभारी ऋषि दुगड़ ने 19वें राष्ट्रीय किशोर मंडल अधिवेशन 'सृजन' के थीम सॉन्ग की प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय प्रभारी अरविंद पोखरणा, सह प्रभारी वैभव नाहटा, अधिवेशन संयोजक कुलदीप कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। किशोर मंडल सदस्यों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

किशोर मंडल की ओर से नौ संकल्पों की माला पूज्य चरणों में समर्पित की गई। अधिवेशन के मंचीय कार्यक्रम का संचालन अभातेयुप महामंत्री अमित नाहटा ने किया।

बोलती किताब

आध्यात्मिक सेवा तीर्थ सेवा है

जैनदर्शन के अनुसार : आत्मा का त्रैकालिक अस्तित्व है। वह हमेशा थी, वर्तमान में है और हमेशा रहेगी। आत्मा कभी अस्तित्वहीन नहीं बनती। उसमें पर्याय परिवर्तन होता रहता है। एक जन्म के बाद आत्मा दूसरा जन्म ग्रहण कर लेती है। यह क्रम तब तक चलता रहता है, जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती है। इस जन्म-मरण के चक्र में प्राणी विभिन्न प्रकार के दुःख भोगता है। दुःख-मुक्ति के लिए अध्यात्म की साधना आवश्यक है। उसके लिए सम्यक् दर्शन (श्रद्धा) अनिवार्य है।

प्रश्न होता है- अध्यात्म का पहला सोपान कौनसा है ? सामान्य भाषा में तो अध्यात्म का पहला सोपान सम्यक्त्व है, परन्तु आचार्य भिक्षु के संदर्भ में देखूं तो मिथ्यात्व या मिथ्या दृष्टिकोण पहला सोपान है, क्योंकि मिथ्यात्वी की करणी को भी आराधक माना गया है। वह भी मोक्ष की ओर ले जाने वाली होती है। अगर सम्यक्त्व को पहला सोपान मान लेंगे तो मिथ्यात्वी की क्रिया को कौनसा सोपान मानेंगे ?

मंद गति से चलने वाली चींटी यदि चलती रहती है तो वह सैंकड़ों योजन की दूरी पार कर देती है और बहुत शीघ्र गति से चलने वाला गरुड़ यदि नहीं चलता है तो वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। गति तेज है या मंद, इसकी अपेक्षा गति है या नहीं, यह ज्यादा महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। कहीं तीव्र गति अच्छी होती है तो कहीं मंद गति भी अच्छी होती है।

हमारे आदर्श अर्हत् हैं। वे वीतराग हैं। मेरे में वीतरागता उतनी है या नहीं, इसका अंकन करने का मौका अर्हत् और सिद्धों के आधार पर मिल सकता है। हमारे अनेक साधु-साध्वियां, समण-समणियां अनेक महापुरुषों की जीवनियां पढ़ते होंगे। महापुरुष की जीवनी को पढ़ने से हमें व्याख्यान की सामग्री मिल सकती है। यह अच्छी बात है, किन्तु हमारे लिए और ज्यादा अच्छी बात यह है कि हम उन्हें आदर्श के रूप में देखें। वह महापुरुष ऐसा हुआ है, हमारे वे आचार्य ऐसे हुए हैं तो मेरी स्थिति क्या है, क्या मैं वैसा हूं या मेरे में कमी है?

गुरु पर शिष्यों को तैयार करने का जिम्मा होता है और मेरे ख्याल में तेरापंथ के आचार्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जिम्मा या दायित्व होता है अपनी प्रतिकृति के रूप में किसी को नियुक्त कर देना, मनोनीत कर देना। जब तक अपनी प्रतिकृति को तैयार नहीं किया जाता है, तब तक एक विशेष कार्य अवशेष की सूची में रहता है।

साधु-साध्वियों की सेवा करना और श्रावक-श्राविकाओं की भी आध्यात्मिक सेवा करना तीर्थसेवा है। यह सेवा करना भी सम्यक्त्व को पुष्ट बनाने का और सम्यक्त्व को विभूषित करने का एक उपाय है। गांव में साधु- साध्वियां हों तो श्रावक-श्राविकाओं को उनकी उपासना करनी चाहिए। यथावसर आचार्यों की भी उपासना करनी चाहिए।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

श्रीउत्सव का भव्य आयोजन

टिटिलागढ़। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार स्थानीय पंचायती महावीर धर्मशाला में श्री उत्सव का भव्य आयोजन तेरापंथ महिला मंडल के द्वारा किया गया।

श्री उत्सव का उद्घाटन स्थानीय नगर पालिका अध्यक्ष ममता जैन द्वारा किया गया। वरिष्ठ श्रावक सुरेंद्र जैन ने मंगलाचरण किया।

अध्यक्ष बॉबी जैन ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हमारे महिला मंडल के गठन को 27 वर्ष हो चुके हैं पर प्रथम बार श्री उत्सव का आयोजन हो रहा है। श्री उत्सव लगाने का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को सशक्त करना और उनको आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है। श्री उत्सव में 20 स्टाल लगाए गए थे जिनमें पांच स्टॉल महिला मंडल की ओर से थे। कार्यक्रम में किशोर मंडल एवं अन्य संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में कुल 400 बहनें शामिल हुई।

❖ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं– मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।

– आचार्य श्री महाश्रमण

प्रतिभा, पुरुषार्थ और अध्यवसाय से करें श्रुत की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
23 जुलाई, 2024

अध्यात्म साधना के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि जैन तेरापंथ धर्मसंघ में 32 आगम स्वीकृत हैं, उनमें ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और एक आवश्यक हैं। यह आगम बत्तीसी है।

इन ग्यारह अंगों में पांचवां अंग है- भगवती सूत्र। इसका मूल नाम भगवई विआहपण्णती है जिसे संक्षिप्त में भगवती कहा जाता है। भगवती बड़ा सम्मानजनक शब्द है।

भगवती की यह विशेषता है कि वर्तमान में उपलब्ध 32 आगमों में सबसे बड़ा विशालकाय आगम भगवती सूत्र है। भगवती सूत्र में संवाद शैली - प्रश्नोत्तर के माध्यम से ज्ञान प्रस्तुत किया गया है। आगमों पर व्याख्या-चूर्णि भी मिलती है। श्रीमद् जयाचार्य ने राजस्थानी भाषा में 'भगवती की जोड़' की पद्यात्मक रचना कर एक असाधारण कार्य किया था। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम के प्राबल्य से ही कोई इतनी बड़ी रचना कर सकता है।

आचार्य प्रवर ने फ़रमाया कि भगवती सूत्र पर आधारित व्याख्यान के क्रम में 26वें शतक से पहले के शतक मुंबई व छापर चतुर्मास में संभवतः हो चुके हैं। भगवती सूत्र मानो समुद्र सा है। समुद्र को पार करते-करते काफी हिस्सा इस समुद्र का पार कर लिया, थोड़ा इसमें बचा है, वो यथासंभव बताया जा सकेगा। आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा और श्रावण कृष्णा एकम ये दोनों तिथियां आगम स्वाध्याय के लिए निषिद्ध गई हैं। वर्ष में और भी तिथियों को आगम के लिए अस्वाध्यायी माना गया है। आज से आगम का स्वाध्यायकाल शुरू हो चुका है।

26 वें शतक के प्रथम उद्देशक में बताया गया है कि भगवती श्रुत देवता को नमस्कार है। भक्ति से श्रुत की आराधना करना, जिनेश्वर देव की आराधना करना है। भगवती भी ज्ञानवती है, ज्ञान का सम्मान है। इस भगवती के ज्ञाता चारित्र युक्त साधु को भी नमस्कार है। श्रुत को ग्रहण करने का प्रयास करें। बहुश्रुत शब्द भी आता है। वह चारित्र आत्मा जिसके पास अनेक आगम-ग्रंथों का ज्ञान है, वह बहुश्रुत है। बहुश्रुत बनना भी सामान्य बात नहीं है। प्रतिभा, ग्रहण शक्ति, पुरुषार्थ, अध्यवसाय, लगन आदि के द्वारा ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास करें। ज्ञान को ग्रहण करने में स्थिर अध्यवसाय, विधि-विधान का ज्ञान होना चाहिए, इसके बिना व्यक्ति पारंगत नहीं बन सकता। ज्ञान भी पात्र को ही दिया जाना चाहिए।

पात्र बड़ा हो, स्वच्छ हो, ज्ञान देने वाला अच्छा ज्ञानी और योग्य हो और ज्ञान लेने वाला भी योग्य हो, प्रतिभा - प्रज्ञा का योग हो तो वह बहुश्रुत बन सकता है। इस प्रकार भगवती सूत्र में श्रुत देवता को नमस्कार किया गया है।

पूज्यप्रवर की मंगल प्रवचन के पश्चात् साध्वी त्रिशलाकुमारीजी एवं सहवर्ती साध्वी वृंद ने गीत के माध्यम से पूज्यवर की अभिवन्दना की। साध्वी चैतन्ययशाजी, साध्वी राजश्रीजी, साध्वी धृतिप्रभाजी, साध्वी हिमश्रीजी, साध्वी मंजुलयशाजी, साध्वी अर्चनाश्रीजी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

इन्द्रियों की दृष्टि से सबसे अविकसित प्राणी होते हैं एकेन्द्रिय जीव : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
24 जुलाई, 2024

अध्यात्म साधना के महोदधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि आर्हत् वाङ्मय में पांचवा अंग है- भगवती सूत्र। भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया - एकेन्द्रिय कितने प्रकार के होते हैं? उत्तर में गौतम के नाम कहा गया है- एकेन्द्रिय पांच प्रकार के होते हैं, पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पति काय। हमारी दुनिया में दो ही चीजें हैं- जीव या अजीव। पच्चीस बोल में इक्कीसवां बोल है - राशि दो - जीव और अजीव। यह जगत इन दो तत्त्वों का सम्मिलित रूप है। कुछ अजीव दृश्य तो कुछ अदृश्य भी होते हैं। जैसे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल, ये अजीव द्रव्य अमूर्त्त हैं, एक पुद्गलास्तिकाय ऐसा अजीव द्रव्य है, जो दृश्य हो सकता है।

आत्मा अपने आप में अमूर्त्त है। जीव दो प्रकार के हैं- सिद्ध और संसारी। सिद्ध जीव तो पूर्णतया कर्ममुक्त हैं। संसारी जीव यों तो अमूर्त्त हैं, पर कर्म लगे होने के कारण कर्म और आत्मा एकामेक बने हुए हैं। सिद्ध भगवान जो सिद्ध भी हैं और शुद्ध भी हैं, उन आत्माओं पर कोई कर्म मल नहीं होता। वे पूर्णतया अमूर्त रूप में होते हैं। जब तक संसारी अवस्था में हैं, कर्म पूर्णतया दूर होते ही नहीं हैं। चौदहवें गुणस्थान वाले महापुरुष के भी कर्म लगे हुए होते हैं। संसारी जीवों को कर्म की अपेक्षा से मूर्त्त भी कह सकते हैं, पर कर्म भी आंखों के द्वारा अवलोकनीय नहीं बन सकते।

संसार में एकेन्द्रिय प्राणी एक प्रकार से सबसे अधिक अविकसित प्राणी हैं। एक ही इन्द्रिय है- स्पर्शनेन्द्रिय। द्वीन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय धीरे-धीरे और विकसित प्राणी हो जाते हैं। इन्द्रियों की दृष्टि से चतुरिन्द्रिय की अपेक्षा पंचेन्द्रिय जीव पूर्ण विकसित प्राणी हो जाते हैं। एकेन्द्रिय जीव स्थावर कहलाते हैं। धूल उड़ भी सकती है, पानी भी बरसता है, अग्नि में भी लपटें उठती हैं, वायु भी चलती है, वनस्पति भी बढ़ती है, पर ये अपनी इच्छा से गति नहीं कर सकते। इनके स्थावर नाम कर्म का बन्ध होता है। सारे स्थावर एकेन्द्रिय जीव हैं, जो पांच प्रकार के होते हैं। शेष सारे त्रसकाय के जीव हैं। एक अपेक्षा से तीन त्रस हैं, तीन स्थावर हैं। तेजसकाय और वायुकाय गति त्रस हैं इसलिए इन्हें त्रस की कोटि में लिया सकता है। पृथ्वीकाय, अपकाय और वनस्पतिकाय ये तीन स्थावर हैं।

आगम अनुसार तेजस्काय और वायुकाय में कहीं-कहीं एक समान नियम लागू होते हैं। पृथ्वी, अप् और वनस्पतिकाय में कहीं-कहीं एक समान नियम लागू हो सकते हैं। इस तरह इनके दो वर्ग हो जाते हैं, पर हैं पांचों एकेन्द्रिय ही। इनके कर्म प्रकृतियां आठों ही होती है। कर्मों में कोई फर्क नहीं है, आठों कर्मों का इनके बन्धन होता है, आठों कर्म झड़ते भी हैं।

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने मंगल उद्बोधन में कहा कि सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप को मुक्ति का मार्ग बताया गया है। भक्ति को हम स्वाध्याय के अन्तर्गत ले सकते हैं और स्वाध्याय को तप के अंतर्गत ले सकते हैं। भक्ति चारित्र का भी अंग बन सकती है और दर्शन का भी अंग बन सकती है। भक्ति भगवान से जोड़ने वाला तार है। हमारे यहाँ भाव पूजा के रूप में भक्ति की जाती है। स्तवन और स्तुति से ज्ञान, दर्शन, चारित्र बोधि को प्राप्त करता है।

पूज्यवर की अभिवन्दना में मुनि हितेन्द्रकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी एवं मुनि अभिजीतकुमारजी ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संस्कारों के धन से धनवान बने किशोर : आचार्यश्री महाश्रमण

■ तेरापंथ किशोर मंडल के 19वें राष्ट्रीय अधिवेशन 'सृजन' का हुआ समापन ■ किशोरों में ज्ञान का विकास एवं भाषाओं का ज्ञान हो

सूरत।
22 जुलाई, 2024

तेरापंथ अधिनायक युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महावीर समवसरण में अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि हमें मनुष्य जन्म संप्राप्त है। पांच इंद्रियों वाला शरीर प्राप्त होना और उसमें भी मनुष्य जीवन मिलना, यह एक विशेष बात है। पंचेंद्रिय तो तिर्यंच, असंज्ञी मनुष्य, देव और नारक भी होते हैं पर संज्ञी मनुष्य का जीवन मिलना अपने आप में विशेष उपलब्धि मानी जा सकती है।

मनुष्य जीवन में आयुष्य कभी लंबा भी होता है, तो कभी छोटा भी होता है। अवसर्पिणी के छः अर और उत्सर्पिणी के छः अर हैं। तीन पल्योपम की तुलना में वर्तमान का आयुष्य स्वल्प है। वर्तमान में तो किसी को 200 वर्ष भी नहीं आ रहे हैं। हमारे धर्मसंघ में साध्वी बिदामांजी 100 वर्ष पार के हैं।

अधिकतर लोग तो 100 के अंदर-अंदर ही परभव पथगामी बन जाते हैं। भविष्य में तो आयुष्य बीस वर्ष, सोलह वर्ष तक का भी हो सकता है।

इस मानव जीवन में वृद्धावस्था भी आ सकती है तो तारूण्य भी आ सकता है। वृद्धावस्था कम लोगों को, तारूण्य उससे अधिक को, किशोर और बाल्यावस्था और अधिक लोगों को प्राप्त होती है। किशोरों का अधिवेशन हो रहा है, विभिन्न क्षेत्रों से किशोरों की समागति सूरत में हुई है। किशोर एक बहुत महत्वपूर्ण अवस्था होती है। चूंकि यह नई पौध है, इसे अच्छे निमित्त मिल जाए और उपादान हो तो यह बहुत विकसित हो सकती है, सुकार्यकारी बन सकती है। किशोर स्वयं, परिवार, समाज, देश और विश्व के लिए कुछ योगदान देने वाले बन सकते हैं। अच्छा पथदर्शन मिले, अच्छी सहायक सामग्री उपलब्ध हो जाए तो किशोर पीढ़ी का अच्छा विकास हो सकता है, उनमें अच्छे संस्कार आ सकते हैं।

किशोरों में ज्ञान का विकास हो, भाषाओं का ज्ञान हो, अन्य विषयों का ज्ञान भी हो। कोई डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, न्यायाधीश भी बन सकते हैं। कोई राजनीति में जा कर लोकसभा, राज्यसभा, विधायक, मंत्री या उच्च पद पर आ सकते हैं। आज जो किशोर हैं, वे हीं कभी राजनीति में उच्च पदों पर, धर्म नीति के क्षेत्र में अच्छे स्थानों पर अथवा सामाजिक क्षेत्र में उच्च स्थानों पर सेवा देने वाले बन सकते हैं। किशोर कभी युवा और प्रौढ़ बन सकते हैं पर प्रौढ़ कभी वापस किशोर नहीं बन सकते। प्रौढ़ व्यक्तियों के आचरणों में बालत्व आ सकता है पर अवस्था में नहीं। वार्धक्य में आदमी थोड़ा बच्चे जैसा बन सकता है। छोटा बच्चा अपने पिता का, बड़े का हाथ पकड़ कर चलता है, वृद्ध भी किसी का हाथ पकड़ कर चलते हैं। छोटे बच्चे और वृद्ध दोनों को सहारे की आवश्यकता होती है। पहले मां-बाप बच्चे की सेवा करते हैं, उनके वृद्ध होने पर बच्चे भी मां-बाप की सेवा करते हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण उपक्रम है किशोरों को संभालना। किशोर मंडल से जुड़ जाने से किशोरों के गलत रास्ते पर जाने से बचाव की संभावना बन जाती है। स्कूली शिक्षा के साथ अच्छे धार्मिक संस्कार मिल जाते हैं तो अच्छी संपदा उनके पास हो सकती है। किशोर संस्कारों के धन से धनवान बनें। किशोर नशा मुक्त रहें, ड्रग्स फ्री रहें। सोशियल मीडिया आदि का अवांछनीय, अहितकर प्रयोग करने से बचें, उपकरणों का संयम करें, डिजिटल डिटॉक्स का प्रयास करें।

सामान्यतया, सूर्योदय होने से पहले-पहले निद्रा मुक्त हो जाएं।

(शेष पेज 10 पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।